अंक - 28 | सन् -2021

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

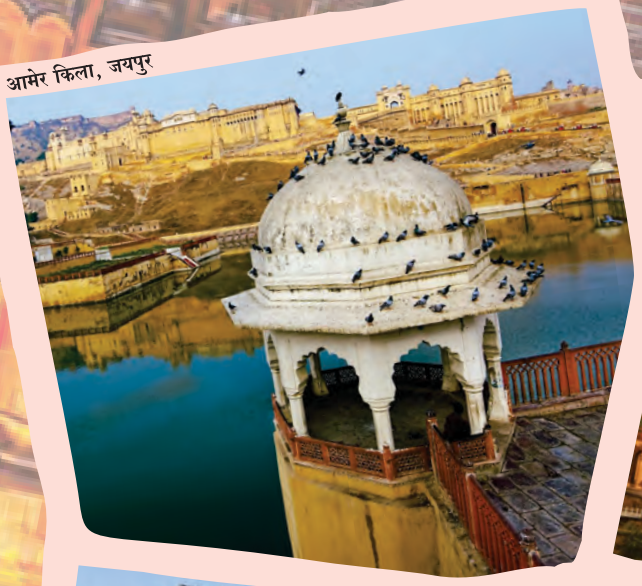
आमेर किला, जयपुर

मेहरानगढ़, जोधपुर

सागर, अलवर

लेक पैलेस, उदयपुर

श्यामहल, जयपुर

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर

स्वतत्रंता दिवस समारोह-2021

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

अंक - 28 विक्रम सम्वत्-2078 सन् -2021

संरक्षक
श्री प्रमोद कुमार सिंह
मुख्य आयुक्त

प्रधान सम्पादक
श्री चन्द्र प्रकाश गोयल
प्रधान आयुक्त

प्रबन्ध सम्पादक
श्रीमती शशि पंवार
संयुक्त आयुक्त

सम्पादक
श्री ए. के. मीना
सहायक आयुक्त

कार्यकारी सम्पादक दल
श्रीमती नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवादक
श्री अशोक कुमार बिरानियां, वरिष्ठ अनुवादक
श्री हरकेश कुमार मीना, कनिष्ठ अनुवादक
श्री मानसिंह गुर्जर, कर-सहायक

केवल विभागीय प्रयोगार्थ

1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	संदेश	3–4
2.	संरक्षक की कलम से	5
3.	प्रधान सम्पादक की कलम से	6
4.	संदेश	7–13
5.	प्रबन्ध सम्पादक की कलम से	14
6.	सम्पादक की कलम से	15
7.	मौलिक सृजनात्मकता	16
8.	आओ, सब इंसान बने हम	17
9.	बेटी बचाओ	18
10.	स्वच्छता पखवाड़ा	19–20
11.	'लकी'	21–23
12.	ख्वाहिशों का अंधा कुआँ	23
13.	नया अध्याय	24–25
14.	गुरूवर	25
15.	बलिदान याद दिलाते है	26
16.	अध्यक्ष, सीबीआईसी का दौरा उदयपुर/जयपुर	27–29
17.	जीएसटी दिवस समारोह, 2021	30–31
18.	आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम	32–34
19.	संस्मरण	35–37
20.	'आज' की किताब	37
21.	विशेष	38
22.	अहसास	39
23.	देवदूत	40–45
24.	जाम–ए–इश्क	46
25.	हिन्दी दिवस : एक आत्मावलोकन	47–48
26.	समय	48
27.	नराकास द्वारा प्रदत्त पुरस्कार	49
28.	राजभाषा पुरस्कार	50–55
29.	राजभाषा समारोह–2020	56
30.	पूर्ण स्वच्छता का लक्ष्य– ये सफर जरा फिल्मी है	57–59
31.	मैं और मेरी चाय	60
32.	मनीष	60
33.	छोटी–छोटी उपयोगी बातें	61–62
34.	सावन बरखा बरसे	62
35.	स्मृति–शेष	63–64
36.	आवाज एक बेटी की	64
37.	पुराने खत	65
38.	भूख	66
39.	दर्द का रिश्ता	66
40.	यह मेरा हिंदुस्तान हैं	67
41.	हिंदी पखवाड़ा–2020 : एक रिपोर्ट	68–70
42.	कोविड टीकाकरण शिविर	71
43.	सीमा शुल्क दिवस समारोह	72
44.	सीजीएसटी रेंज मेडता सिटी रक्तदान शिविर	73
45.	बाल चित्रकारी	74–76

सत्यमेव जयते

सदस्य
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई–दिल्ली

संदेश

राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं संवर्धन करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और इस दायित्व को पूरा करने में पत्रिका का प्रकाशन करना एक प्रशंसनीय कार्य है।

वर्तमान समय में हिंदी पूरे देश में सर्वाधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है तथा यह अत्यंत खुशी की बात है कि आज न केवल कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि हुई है बल्कि सार्वजनिक जीवन में अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी हिंदी का प्रभुत्व बढ़ा है ।

मैं ''राजप्रभा'' पत्रिका के नवीन अंक के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूं तथा इसकी इसकी सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(विवेक जौहरी)

सत्यमेव जयते

सदस्य
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई–दिल्ली

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क, जयपुर–जोन, जयपुर की विभागीय हिन्दी पत्रिका ''राजप्रभा'' का प्रकाशन किया जा रहा है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दिशा में हिन्दी पत्रिका का नियमित प्रकाशन महत्त्वपूर्ण कदम है।

यह पत्रिका पूर्ण रूप से अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते हुए नई ऊंचाइयों को छुए इसी कामना के साथ ''राजप्रभा'' के पूर्व अंक की भांति पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(संगीता शर्मा)

सत्यमेव जयते

मुख्य आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (जयपुर जोन)
जयपुर

संरक्षक की कलम से

विभागीय हिंदी पत्रिका ''राजप्रभा'' के प्रकाशन से मुझे लगातार तीसरी बार जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। विभाग का गौरव मानी जाने वाली यह पत्रिका मुझे व्यक्तिगत रूप से अपनत्व का एहसास कराती है।

हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करना राजभाषा विभाग के प्रमुख दायित्वों में से एक है और पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन इस दायित्व को पूरा करने में उपयोगी सिद्ध हुआ है। विभागीय अधिकारियों को अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को जीवंत रखने के लिए विभागीय पत्रिकाएं एक उपयोगी मंच साबित होती हैं। ''राजप्रभा'' भी कार्यालय में राजभाषा हिंदी के उत्थान, पहचान एवं अस्मिता की उन्नति हेतु एक उत्तम प्रयास कर रही है।

वर्तमान में तकनीकी एवं संचार साधनों के सहज एवं सुलभ प्रयोग से विभिन्न देशों के बीच की भौगोलिक दूरियां लगभग मिट-सी गई हैं और संपूर्ण विश्व एक गांव सा बन गया है जिससे यह आशा की जा सकती है कि बढ़ते वैश्वीकरण के कारण सब भाषाओं का वैश्वीकरण हो पाएगा जिसमें हिंदी भाषा भी एक होगी। मेरा मानना है कि हिंदी में ''वसुधैव कुटम्बकम'' के विचार के कारण अंतर्राष्ट्रीय जगत के दर्शन समाहित हैं।

मेरा विश्वास है कि पत्रिका के आगामी अंक भी विभाग में राजभाषा के उज्ज्वलता के पक्ष में सहायक सिद्ध होंगे।

(प्रमोद कुमार सिंह)

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय
जयपुर

प्रधान संपादक की कलम से

''राजप्रभा'' के प्रधान संपादक के रूप में मेरा यह प्रथम प्रयास आप सभी के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे एक विलक्षण जिम्मेदारी एवं अनुभूति का एहसास हो रहा है। यह जिम्मेदारी मेरे जीवन के महत्त्वपूर्ण एवं यादगार क्षणों में से एक है। विभागीय हिंदी पत्रिका ''राजप्रभा'' से मेरा यह सफर वर्ष 2019 में अलवर आयुक्तालय से शुरू होकर वर्तमान में प्रधान संपादक के महत्त्वपूर्ण दायित्व तक पहुँचा है। किसी पत्रिका में प्रधान संपादक की जिम्मेदारी वास्तव में एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है।

राजभाषा के बारे में मेरा विचार है कि हम हिंदी के सरल रूप को अपनाकर अपने सभी कार्य हिंदी में करने को प्राथमिकता दें। सरल, सुगम व सहज हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग बिना किसी हिचकिचाहट से करने से राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में गुणात्मक प्रगति होगी।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कोविड-19 के कारण पूरे विश्व के सम्मुख विकट परिस्थितियां उत्पन्न हुई हैं परंतु इन परिस्थितियों को चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का ई-बैठकों तथा ई-हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। बेशक, हमारे लिए यह कदम नया है, दौर भी नया है मगर सहजता के साथ धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए इस दौर में भी आगे बढ़ने की जरूरत है।

पत्रिका के सभी रचनाकार एवं लेखक साधुवाद के पात्र हैं जिन्होनें अपनी लेखनी एवं विचारों के माध्यम से पत्रिका को अलंकृत करने में योगदान दिया। भविष्य में भी सहयोग की अपेक्षा के साथ...

(चन्द्र प्रकाश गोयल)

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय
अलवर

संदेश

विभागीय हिन्दी पत्रिका ''राजप्रभा'' के प्रकाशन से जुड़ना मेरे लिए बड़ी ही सुखद अनुभूति है। केंद्र सरकार के सभी विभागों में विभिन्न प्रान्तों के अधिकारीगण कार्य करते हैं। उनकी अलग-अलग संस्कृतियों एवं अन्य विविधताओं के आदान-प्रदान के लिए एक सामान्य सूत्र भाषा की आवश्यकता होती है और सहज एवं सरल शैली के कारण हिन्दी सूत्रभाषा का बखूबी निर्वहन कर रही है।

हिंदी भाषा की सरल शैली के कारण यह हमारी अभिव्यक्ति सम्प्रेषण का भी एक अहम स्त्रोत है। विभाग में कार्यरत अधिकारियों एवं उनके परिवार के सदस्यगणों को अपनी अभिव्यक्ति सम्प्रेषण एवं साहित्यिक अभिरूचि को साकार करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विविधता में एकता को दर्शाने वाली यह पत्रिका अपने बहुआयामी दायित्व में पूर्णरूपेण सफल होगी ।

पत्रिका की सफलतार्थ मेरी शुभकामनाएं।

(जय प्रकाश सिंह)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील आयुक्तालय
जोधपुर

संदेश

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता की भाषा है। साथ ही देश की संपर्क व जनभाषा भी है। अपनी भाषा में लेखन से विचारों व कार्यों की अभिव्यक्ति सरल, सहज व स्वाभाविक होती है। ऐसे में विभागीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन विकास का एक और सोपान है। मुझे यह जानकर अति हर्ष की अनुभूति हो रही है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा अपनी विभागीय पत्रिका राजप्रभा के नवीन अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं कामना करता हूँ कि यह पत्रिका निरंतर नित नई बुलन्दियों को छुएं।

सी.आर.मीना

(सी.आर. मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील आयुक्तालय
जयपुर

संदेश

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर-जोन, जयपुर द्वारा राजभाषा पत्रिका ''राजप्रभा'' के 28 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह एक सराहनीय प्रयास है कि भावों की अभिव्यक्ति के इस माध्यम को निरंतर बनाये रखने का प्रयास किया जा रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पत्रिका के प्रकाशन से आयुक्तालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार को निश्चित रूप से नये आयाम मिलेंगे तथा वार्षिक कार्यक्रम के अनुसरण में सरकारी निर्देशों का अनुपालन भी सुनिश्चित हो सकेगा।

मेरी ओर से पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हार्दिक बधाई जिनके मार्गदर्शन एवं आलेखों से यह पुस्तिका सुसज्जित हुई है।

(सुग्रीव मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जोधपुर
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय, जोधपुर

संदेश

केंद्र सरकार के सभी विभागों में भिन्न-भिन्न प्रान्तों के विभिन्न भाषा-भाषी अधिकारीगण कार्य करते हैं। उनकी विभिन्न संस्कृतियों एवम् अन्य विविधताओं के आदान-प्रदान के लिए एक सामान्य सूत्र भाषा की आवश्यकता होती है। हिंदी भाषा की सरल शैली हमारी इस अभिव्यक्ति सम्प्रेषण का एक अहम स्त्रोत बनाती है।

इस उद्देश्य के साथ ही जयपुर राजभाषा पत्रिका ''राजप्रभा'' विभाग में कार्यरत अधिकारियों एवं उनके परिवार के सदस्यगणों को अपनी साहित्यिक अभिरूचि को साकार करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विविधता में एकता को दर्शाने वाली यह पत्रिका अपने बहुआयामी दायित्व में पूर्णरूपेण सफल होगी और विभाग में काम करने वाले अधिकारियों एवं उनके परिवार के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम बनेगी।

पत्रिका की सफलतार्थ मेरी शुभकामनाएं।

(राजीव अग्रवाल)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय
जयपुर

संदेश

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा अपनी विभागीय पत्रिका ''राजप्रभा'' का प्रकाशन किया जा रहा है यह बहुत ही हर्ष की बात है। हिंदी को राजभाषा के रूप में इसलिए अनुमोदित किया गया है क्योंकि हिंदी को जानने, समझने व बोलने वाले देश के कोने-कोने में विद्यमान हैं। हिंदी में कार्य करना सहज व सरल है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में विभागीय पत्रिका राजप्रभा का निरंतर प्रकाशन एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

राजभाषा पत्रिका के एक और अंक के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(महेन्द्र पाल)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय
उदयपुर

संदेश

यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा राजभाषा की गृह पत्रिका ''राजप्रभा'' के 28वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा पत्रिका का उद्देश्य राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित एवं विकसित करने हेतु उपयुक्त मंच प्रदान करना होता है।

मैं आशा करता हूं कि यह पत्रिका हिन्दी के विकास एवं प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों एवं इसमें शामिल सभी लेखकों, रचनाकारों को उनके प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

(डॉ. बी.एस. मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
सीमा शुल्क आयुक्तालय, जोधपुर
(मुख्यालय–जयपुर)

संदेश

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा राजभाषा की गृह पत्रिका ''राजप्रभा'' के 28वें अंक के प्रकाशन से जुड़कर मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। आयुक्तालय में राजभाषा के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने की दिशा में राजभाषा पत्रिका एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए राजभाषा पत्रिका ''राजप्रभा'' का निरंतर प्रकाशन आयुक्तालय द्वारा किया जा रहा है यह बहुत गौरव की बात है। हिन्दी भाषा अत्यन्त सहज एवं सरल भाषा है। यदि हम बोलचाल के साथ ही लिखने में भी हिंदी का प्रयोग अपने दैनिक व्यवहार में लाएं तो हम सम्पूर्ण कार्यालयीन कार्य हिन्दी में कर सकने में सक्षम है।

पत्रिका की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राहुल नांगरे)

सत्यमेव जयते

संयुक्त आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय
जयपुर

प्रबंध संपादक की कलम से

विभागीय हिंदी पत्रिका राजप्रभा के प्रबंध संपादक के दायित्व को पूरा करने का प्रयास मेरे लिए सौभाग्य की बात है। सभी वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन एवं रचनाकारों की सृजनशीलता के सहयोग से मेरा यह प्रथम प्रयास आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

शृंगार में जो स्थान बिंदी का है वही स्थान कार्यालय में राजभाषा हिंदी का है। इस कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा हिंदी में कार्य करके अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं जिसके कारण सभी वर्ग के अधिकारियों का ''राजप्रभा'' से विशेष लगाव है। यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि यह पत्रिका विभाग की आत्मा तथा गौरव है।

पूर्व के अंकों की भाँति पत्रिका के इस अंक को भी सतरंगी कलेवर देकर विभिन्न लेखों, कहानियों, कविताओं, संस्मरण तथा विभागीय गतिविधियों के छाया-चित्रों से सुसज्जित करने का प्रयास किया गया है।

पत्रिका के माध्यम से मैं वरिष्ठ अधिकारियों का भी आभार प्रकट करती हूँ जिन्होनें मुझे पत्रिका के संपादन का दायित्व सौंपा एवं अपना मार्गदर्शन प्रदान किया। सहयोग एवं पथ-प्रदर्शन के लिए रचनाकारों एवं सहयोगियों का भी हार्दिक साधुवाद।

पत्रिका के माध्यम से अंत में मैं यहीं कहना चाहूँगी:-

आओ, मिलकर एक ऐसा मुकाम बनाएं।

सारी दुनिया हिंदी बोले, गर्वित हिंदुस्तान हो।।

(शशि पंवार)

सत्यमेव जयते

सहायक आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय
जयपुर

संपादक की कलम से

इस जोन के सभी आयुक्तालयों को फूलों की माला की तरह एकता के सूत्र में पिरोकर रखने वाली विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने के ठोस कार्य किये जाएं और यह तभी संभव है जब हमें अपनी भाषा के प्रति अपने दायित्वों का स्पष्ट ज्ञान हो, लक्ष्य प्राप्ति की सार्थक योजनाएं बनें और दृढ़ता से योजनाओं को कार्यान्वित करके उनका सतत् मूल्यांकन किया जाए। हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करने की जरूरत है।

पत्रिका के प्रकाशन में माननीय मुख्य आयुक्त महोदय, प्रधान आयुक्त महोदय तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों का जो सहयोग एवं प्रेरणा मिली हैं उसके लिए सभी का मैं तहेदिल से आभार प्रकट करता हूँ।

पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन में योगदान देने हेतु मैं सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों का धन्यवाद करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक भी पूर्व के अंकों की भांति सभी को पसंद आएगा और भविष्य में भी आप लोग अपनी रचनाओं से इसे समृद्ध करते रहेंगे ।

सुधी पाठकों के अमूल्य सुझावों व सकारात्मक मार्गदर्शन की प्रतीक्षा में ...

(ए. के. मीना)

मौलिक सृजनात्मकता

सुभाष चन्द्र अग्रवाल
अपर महानिदेशक,
डीजीएचआरडी, नई दिल्ली

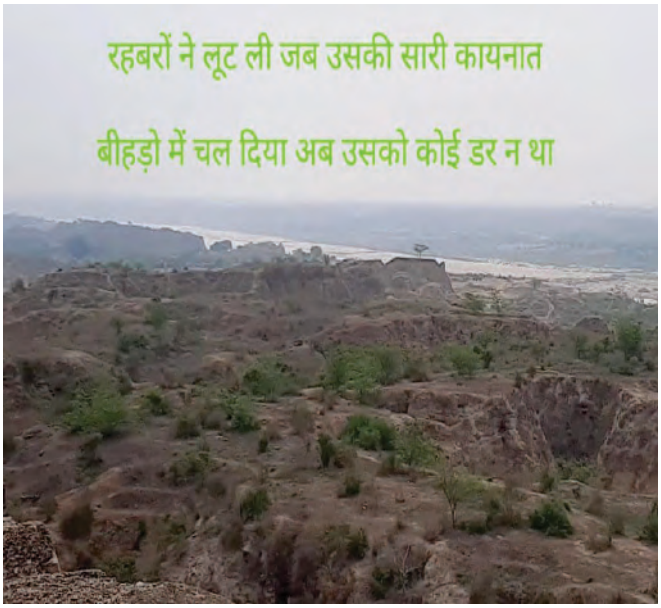

आओ, सब इंसान बने हम

मंजूर अली अंसारी, अपर आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर

आओ, सब इंसान बने हम
मानवता अभिमान बने हम

घृणा, क्रोध, लालच और द्वेष
बदल-बदल कर ये आते भेष
अहंकार जब सिर चढ़ बोले
तब संकेत यह विनाशी है
त्याज उक्त वृत्ति तब सब
आओ, सब इंसान बने हम
मानवता अभिमान बने हम।

ऊंच-नीच और धर्म जात क्या
भेद भाव और कर्म बात क्या
तेरे मेरे और इसके उसके क्या
व्यर्थ के उलझन ये चक्कर हैं
छोड़ो अब बातें सब ऐसी
आओ, सब इंसान बने हम
मानवता अभिमान बने हम।

छल, प्रपंच, कपट जब घेरा
कोमल हृदय, नयन सब फेरा
छाय तब चहु जग में अंधियारा
ज्योति सकल प्रज्ज्वलित हो सब
खंड-खंड कर दो अब अंधियारा
आओ, सब इंसान बने हम
मानवता अभिमान बने हम।

हाड़ मांस जब सबका एक
फिर कैसे हम हुए अनेक
सोच परख फिर बनो विवेक
आंखों की सब पट्टी को फेंक
अलख जगा दो हम सब एक
आओ, सब इंसान बने हम
मानवता अभिमान बने हम।

पीड़ा वेदना चिर सम्यक है
प्रकृति स्रोत चिर सम्यक है
उद्गम ह्रास चिर सम्यक है
फिर कैसा सब यह भेदा-भेद
त्याग कर सब उक्त मतभेद
आओ, सब इंसान बने हम।

❑❑

बेटी बचाओ

रवि मलिक, सहायक निदेशक, प्रवर्तन निदेशालय, जयपुर

पति पर देश और समाज को बदलने की धुन सवार थी और वो इसे पूरा करने के चक्कर में आतंकी गतिविधियों में शामिल हो गया था। जब भी ट्रेनिंग लेकर वापस घर आता तो हर समय धर्मगुरुओं के भाषणों की कैसेट सुनता रहता था। उसने आज सुबह से एक कैसेट लगाई हुई थी और बार-बार उसे अपने जहन में बिठाने की कोशिश कर रहा था। घर में आवाज गूंज रही थी;

..... तुम मेरे बच्चे समान हो। अगर कोई मेरे बच्चों की तरफ आँख उठा कर भी देखेगा तो मैं उसके हाथ काट दूंगा। मुझे कायर ना समझा जाए, ना ही मैं बुजदिल हूँ। तुम क्यूँ सोये पड़े हो, जागो और इन सबसे लड़ो.....

तभी पति को याद आया की आज उसे अपनी गर्भवती पत्नी को डॉक्टर के ले जाना है वो टेप रिकॉर्डर बंद करता है और फिर दोनों डॉक्टर के पास जाते हैं। डॉक्टर से मिल कर आने के बाद पति कुछ अनमना सा महसूस करता है और घर आकर सोचों में गुम हो जाता है। थोड़ी देर बाद वो उठकर सब्जी काट रही अपनी बीवी के पास आता है जैसे कोई फैसला कर के आया हो। पत्नी के चारों तरफ प्यार से हाथों का घेरा बनाते हुए बोलता है, हम यह बच्चा पैदा नहीं करेंगे। पत्नी यह सुनते ही सन्न रह जाती है और उसकी तरफ घूमती है और पूछती है क्यूँ?

पति कहता है डॉक्टर ने बताया है कि इस बार भी लड़की होगी। हमारे पहले ही दो लडकियां है मुझे अब लड़का चाहिए।

पत्नी गुस्से में पति के हाथों के घेरे से निकलने की कोशिश करती है और इसी आपाधापी में टेप रिकॉर्डर का स्विच ऑन हो जाता है और चाक़ू की नोक पति की तरफ हो जाती है। टेप रिकॉर्डर पर फिर गूंजने लगता है।

अगर कोई मेरे बच्चों की तरफ आँख उठा कर भी देखेगा तो मैं उसके हाथ काट दूंगा। मुझे कायर ना समझा जाए, ना ही मैं बुजदिल हूँ। तुम क्यूँ सोये पड़े हो, जागो और इन सबसे लड़ो.....

पति ने चाकू की नोक की चुभन अपने पेट पर महसूस करते हुए पत्नी की आँखों में झाँका और फिर चुपचाप बाहर निकल गया। ❑❑

स्वच्छता पखवाड़ा

विशाल सोलंकी, अधीक्षक, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जोधपुर (मुख्यालय-जयपुर)

लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये

नारे बोले, तख्तियां लाये
रैली की, और गाने गाये
गली दफ्तर के कूड़े हटाये
पर पन्द्रह दिन ही क्यों रह पाए
भूली बिसरी यादें बन के पन्नों में ही ये रह जाये।
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये... ।।

स्वच्छता से है स्वास्थ्य हमारा
स्वच्छता से है मान
स्वच्छ घर और स्वच्छ शहर है
अपनी आन और शान।
स्वच्छ नगर-दफ्तर से, स्वस्थ हो जहाँ सारा
प्रफुल्लित हो जाये धरती अपनी, और प्रकृति मुस्कुराये।
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये... ।।

रैली को अभियान बनायें
अपना स्वाभिमान जगाएं
देश को खुले शौच से मुक्त बना कर
हर कोने में कूड़ेदान लगायें।
स्वच्छता स्वास्थ्य का मूल मंत्र है,
इसको अपना ध्येय बनायें
आओ देश को भी संभालें,
जैसे घर के हर कक्ष चमकाये
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं
आये... ।।

बहुत प्रशंसा की परदेशी,
अब अपने देश को स्वच्छ बनायें,
एक बीमारी ने सिखाया बहुत कुछ
अब इसका हर कारण मिटायें।
इन निर्देशों को बना के रस्में,
आओ सारी रस्में निभाएं
बच्चा-बूढ्ढा, औरत-आदमी सबने मिलकर हैं कदम बढ़ाये,
सारे देश को पाक साफ़ बनाने,
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये...।।

अपने घर का कचरा फेंक कर
हमने अपना घर चमकाया
गली मोहल्ले को किया था गन्दा,
गन्दगी देखी सर चकराया।
ये अपना मोहल्ला भी तो
अपने देश का हिस्सा है
बीमारी यूँ तो दूर न होगी,
हर घर में एक किस्सा है।
आओ अब आगे बढ़ के हम
शहर को अपना घर बनायें

निश्छल मन से अपना के इनको,
स्वच्छ, निर्मल और सुन्दर बनायें।
आओ अब अपना देश चमकाएं
रोगाणु, गन्दगी डर-डर जाये
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये... ।।

गुलामी की बंदिशों से, हमने आजादी पाई है
अपने साथ ये आज़ादी, कुछ कर्त्तव्य भी लेकर आई है
नहीं है ये कोई धरा अजनबी,
ये अपनी भारत माई है।
स्वच्छता को बना के आदत, देश का कायाकल्प करेंगे
करेंगे कुछ प्रयास मांझी से, कुछ छोटे और अल्प करेंगे
भारत माता को स्वच्छ बनाने के हमने फिर संकल्प दोहराए
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये... ।।

भगीरथ प्रयासों ने अपने, हमें कुछ सपने दिखाये हैं
गन्दगी की बेड़ियों से निकाला,
स्वच्छता की गंगा लाये हैं
हाँ, श्रमकण के हैं दरिया बहाए,
ये मझधार की डूबती कश्ती,
हम मौजों से छुड़ा के लाये हैं
होगा ये सपना पूरा, अब हमने बिगुल हैं बजाये
बच्चों को सिखा के नवाचार,
हम सब भी अब आगे आये
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये... ।।

भारत बने, अब गौरवशाली
आये स्वास्थ्य और खुशियाँ निराली
सभी तरफ हो धवल उजाला
बारह मास हो रोशन दिवाली
अंधेरों की तमस मिटाने,
हमने स्वच्छता के हैं दीप जलाये,
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये... ।।

मन से कूड़े के ढेर हटाये
अब वाणी में शुद्धता लाये,
है हृदय को कोमल बनाया
आओ एक संकल्प उठाकर,
सपना ये साकार बनाएं
एक दूजे का साथ निभाए
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये...।।
लो फिर स्वच्छता के दिन हैं आये...।।

❑❑

'लकी'

विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

एक बिल्ली की अत्यंत करुण रुदन की आवाज़ सुनी।

मुंडेर पर चढ़कर मैंने देखा, न वो डरी, न हिली, कमज़ोर सी, मेरी तरफ़ म्याऊं- म्याऊं करने लगी, जैसे कुछ शिकायत कर रही हो।

मुझे लगा ये यहाँ अकेली कैसे है! दो दिन पहले तो मैंने इसे पीछे वाले घर में एक पुराने पलंग पर इसके कुछ बच्चों के साथ देखा था, बहुत बिज़ी थी।

तब तो मेरी तरफ़ बहुत खुशी से देखा था, जैसे कह रही हो ..

मैं भीमाँ हूँ। देखो मेरे बच्चे, कुछ शगुन नहीं दोगे??

मुझे बहुत अच्छा लगा था। उसे देखता था, घर के आस-पास। वो मुझसे डरती नहीं थी, अक़्सर बचा हुआ दूध मैं एक प्याले में रोटी चूरकर उसके साथ डाल देता था, रोटी तो छोड़ देती थी, पर दूध चट कर जाती थी। कभी घर के अंदर आने की कोशिश नहीं की उसने, न कभी कोई नुक़सान। घर के बग़ीचे में आराम से लेटी रहती। कभी-कोई चूहा आता तो पकड़कर खा जाती थी। पालतू तो नहीं थी, पर एक अनजान-सा रिश्ता उससे था।

मेरे छोटे बेटे से उसकी बड़ी दोस्ती थी, बड़े बेटे से कतराती थी। रोज़ जाली के किवाड़ के बाहर बैठकर म्याऊं करती और घंटों मेरा छोटा बेटा जाली के अंदर और वो बाहर बैठी रहती। वो दूध डालता तो बिल्कुल पास से आराम से दूध पीती और चली जाती। दूध अगर गरम होता तो उसके ठंडा होने का इत्मिनान से इंतज़ार करती थी।

एक बार तो ग़ज़ब ही हो गया, मेरे बेटे ने जाली के नीचे से कुछ बिस्कुट डाले तो उसने पंजे से वापस अंदर धकेल दिए, मानो कह रही हो कि मैं खाली मिलने आई हूँ, कुछ खाऊँगी-पीऊँगी नहीं।

कभी कुछ दिन नहीं दिखाई देती, फिर अपने बच्चे लेकर आती, जैसे परिचय करवा रही हो।

लॉकडाउन में घर ज़्यादा रहने के कारण मुझसे भी उसका परिचय प्रगाढ़ हो गया था। कुछ जुड़ाव सा बन गया। जानवर भी शायद समझ जाता है कि कौनसी जगह उसके लिए सुरक्षित है।

एक बार घर के बग़ीचे में लगे परिंडे पर बैठे एक कबूतर पर झपटी। मेरी माँ सत्संगी परिवेश से हैं, ज़ोर से उस पर चिल्लाईं, उसने कबूतर छोड़ दिया और कबूतर आकाश में उड़ गया।

बाद में मैंने कई बार देखा कि वो कबूतरों को आराम से चुगते देखती, कभी उसने फिर उन पर झपट्टा नहीं मारा।

कितना समझता है जानवर, मानव की भावनायें!

मैं उससे पूछता कैसी हो ?

तो उठकर खड़ी हो जाती और बदन को झड़कारती, मानो कहती हो-

मैं आलसी नहीं हूँ, बस ज़रा सुस्ता रही थी।

और कहीं और जाकर लेट जाती। मुझे टुकुर-टुकुर देखती, मानो पूछ रही हो,

अभी खुला नहीं लॉकडाउन ??

दफ़्तर नहीं जाते ?

कभी लगता व्यंग्य कर रही है - वर्क फ्रॉम होम का आनंद ले रहे हो।

कभी ऊँची-ऊँची दीवारें बिना बात ही फाँदती, जैसे मुझे मुँह चिढ़ाकर कह रही हो,

देखो कोरोना ने तुम्हें घर में कैद कर दिया है, मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

मुझे घर का काम करता देख घूरती सी थी।

मुझे साइकोलॉजिकली लगता जैसे मेरे मास्क लगे हुए मुँह को कुछ ध्यान से गर्दन घुमा-घुमाकर देखती है, कुछ समझने की कोशिश करती है कि अचानक मेरा चेहरा बदल कैसे गया ? लॉकडाउन में कोई आने-जाने वाला था नहीं, सन्नाटा सा पसरा रहता था। घर की नीरवता को वही तोड़ती थी, इसलिए उसकी उपस्थिति अच्छी लगती थी।

आजकल मेरा बच्चा मेरे लिहाज़

क कारण उसस कम बात करता था क्योंकि मैंने उसे एक बार डाँट दिया था कि तुम 'लकी' के चक्कर में बहुत टाइम वेस्ट करते हो।

हाँ, मेरा बेटा उसे लकी नाम से बुलाता था।

बेटा भुनभुनाता हुआ पढ़ने बैठ गया और लकी इधर-उधर गर्दन घुमाती चली गई, मानो उसे अच्छा नहीं लगा हो कि उसके कारण बेटे को डाँट पड़ गई।

कुछ दिन वो नहीं आई। मुझे अजीब सा लगा, मुझे लगा मुझे भी उसकी याद आ रही है। मैंने म्याऊं-म्याऊं बोलकर उसे बुलाने की कोशिश की, पर कुछ नहीं हुआ।

मैंने मेरे बेटे से कहा तुम्हारी दोस्त को बहुत दिनों से देखा नहीं, कहाँ चली गई ?

वो भी उदास था, बोला -

पापा लकी फ़ील कर गई, आपने डाँटा था न मुझे उससे दोस्ती पर।

एनीमल्स हैव सैनसेशन्स लाइक ह्यूमन बीइंग्स, पापा।

मैं झेंप गया। मैंने कहा -

अच्छा, बुला लो।

वो खुशी में लकी, लकी बोला और म्याऊं-म्याऊं करती लकी तुरंत आ गई और हमेशा की तरह गर्दन इधर-उधर घुमाने लगी। बहुत खुश लग रही थी।

मेरे बुलाने पर नहीं आई थी !

मैं दंग रह गया ! बच्चे ने उससे कहा-

लकी, पापा सॉरी कह रहे हैं। उसने म्याऊँ बोला।

ऐसा लगा जैसे वो समझ गई।

फिर उस दिन से दिन में एक बार ज़रूर आती, और बच्चे का दिया हुआ कुछ खाकर, थोड़ी देर बार चली जाती।

कई दिनों तक ये सिलसिला चलता रहा।

तीन दिन पहले बेटे ने बताया कि

पापा लकी ने पीछे वाले घर में छः बच्चे दिए हैं।

मुझे दिखाने ले गई थी। चूहे जैसे हैं, पापा।

बच्चों की आँखे बंद हैं।

वो देख नहीं पाएंगे क्या ? वो बहुत उत्साहित था।

मैं भी उसके बच्चे देखकर खुश हुआ। मैंने डोली पर दूध का कटोरा रखा और उसने गटागट पी लिया।

--

आज उसकी करुण पुकार से मन द्रवित हो गया।

मैंने बच्चे से पूछा कि तुम्हारी दोस्त को क्या हुआ, तो वो रोने लगा, बोला-

पापा लकी शिकार पर गई थी और पीछे वाली आंटी ने अपने नौकर से उसके बच्चे फिकवा दिये।

कह रही थीं आवाज़ बहुत करते हैं, बहुत डिस्टरबेंस होता है, माथा दुखता है।

पापा जानवर के बच्चे भगवान का रूप नहीं होते क्या ??

उसके बच्चे ढूँढ लाते हैं,

वो बहुत रो रही है, पापा

उसने कुछ नहीं खाया, वो मर जाएगी।

मुझे खुद्र बहुत दुःख हुआ, बच्चे से क्या कहता ? दुपहर में जैसे वो मुझसे शिकायत-सी कर रही थी।

देर रात तक उसकी करुण पुकार आती रही। बार-बार वो मेरे घर आकर मेरे बच्चे से म्याऊं-म्याऊं कर बच्चे को उस जगह ले जाती जहाँ उसने बच्चे दिए थे फिर बदहवास सी सूँघती हुई सड़क पर दौड़ती और लौट आती। बार-बार इधर-उधर ग़ायब हो जाती। कुछ देर बाद उसके रोने की आवाज़ आनी बंद हो गयी। मेरा बच्चा पूछने लगा।

मैंने बच्चे से कहा

उसके बच्चे उसको मिल गए होंगे, जानवर में सूंघने की क्षमता बहुत होती है इसलिए अब आवाज़ नहीं आ रही। तुम सो जाओ।

कहते हैं बिल्ली सात घर घुमाती है अपने बच्चे।

तुमने कुछ ग़लत सुना होगा, वो आंटी तो बहुत धार्मिक हैं, वो ऐसा नहीं कर सकतीं।

बच्चे ने चैन की साँस ली।

पापा मिल गए होंगे न उसके बच्चे!!

मैंने कहा

हाँ बेटा, ज़रूर मिल गये होंगे, वो ही कहीं ले गई होगी।

इनकी कौन मदद करता है ? ये सब अपने आप कर लेते हैं।

सुबह-सुबह मन देखा, लकी मेरे जाली वाले दरवाज़े के बाहर लेटी हुई थी। मेरा बेटा लकी, लकी आवाज़ दे रहा था पर वो उठ नहीं रही थी।

मेरा बेटा मेरे पास आया और बोला-

क्या हुआ पापा, लकी उठ क्यों नहीं रही ?

पापा लकी मर गई !!

मैंने कहा था न।

आपने उसके बच्चे नहीं ढुँढवाये।

वो ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

मैं अवाक रह गया। इसे क्या सांत्वना दूँ ?

पर्यावरण, ग्लोबल वॉर्मिंग की बड़ी-बड़ी बातें करने वाले और कोरोना महामारी को हराने का दम भरने वाले हम, एक हफ़्ते भी एक जानवर के नवजात बच्चों की आवाज़ बर्दाश्त नहीं कर पाते ?

क्या वो वाहनों और लाउडस्पीकर की आवाज़ से भी तेज़ होती है !!

और मैं बच्चे का सिर सहलाकर उसे चुप कराने लगा।

रोकते-रोकते भी मेरी आँखों से अश्रुधारा बह निकली।

❑❑

ख्वाहिशों का अंधा कुआँ

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

ख्वाहिशों का अंधा कुआँ
अब और गहरा लगता है
कितना ही भरा
फिर भी खाली सा लगता है

मोबाइल की आड़ में
हर शख्स छुपा रहता है
ये खामोश घर
अब जंगल सा लगता है

किसी नेक सलाह से भी
नाराज हो जाता है
हर रिश्ता
अब कमजोर सा लगता है

हर गली में
स्विगी जोमाटो का शोर है
माँ के हाथ का स्वाद
अब गुजरा जमाना सा लगता है

दोस्ती पे
कोरोना का पहरा है
गले मिलकर प्यार जताना
अब बुरा सा लगता है

मायाजाल में फँस
वो परिवार को दाँव पर रखता है
रुपयों की भूख में
वो दीवाना सा लगता है

उसका कामयाब बेटा
अमरीका में सैटल रहता है
माता पिता का सेवक
इंडिया में निकम्मा सा लगता है
ख्वाहिशों का अंधा कुआँ
अब और गहरा लगता है
कितना ही भरा
फिर भी खाली सा लगता है

❑❑

नया अध्याय

शालिनी वर्मा, अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

राधा अस्पताल के बिस्तर के कोने पर सिर टिकाए, आँखों में आँसू भरे बैठी थी। आज उसका प्यारा इकलौता बेटा तेज़स अस्पताल में जिंदगी और मौत के बीच झूल रहा था। उसकी इस हालत के लिए वह भी काफ़ी कुछ जिम्मेदार थी। गुज़रे समय की तस्वीरें उसकी आँखों के सामने आ-जा रहीं थीं।

वह और उसके पति बैंक में कार्यरत थे, तेज़स के पैदा होने के कुछ वर्षों बाद राधा ने नौकरी छोड़ दी ताकि वो तेज़स की अच्छी देखभाल कर सके। तेज़स होनहार बालक था, फिर राधा ने भी अपनी तरफ से कोई कसर न छोड़ रखी थी। उसने तेज़स के सोने-जागने, खाने- पीने, खेलने और पढ़ाई करने का दैनिक टाइम-टेबल बना रखा था। तेज़स अधिकांशत: कक्षा में प्रथम आता था।

धीरे-धीरे उसकी दिनचर्या में पढ़ाई के घंटे बढ़ते जा रहे थे। दसवीं कक्षा के बोर्ड के परीक्षा फल में उसके 97% अंक आए थे। माता-पिता की आँखों में तेज़स को डॉक्टर बनाने के सपने साकार होने लगे थे, उन्होंने उसका दाखिला एक ऐसे स्कूल में करा दिया था जो एक नामी-गिरामी कोचिंग से संबद्ध था। स्कूल में तो नाम मात्र 2-3 घंटों की क्लास होती, शाम तक कोचिंग की फैकल्टी पूरी शिद्दत से मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी कराते।

शाम को कुम्हलाया सा तेज़स घर आता, कुछ खा-पीकर फिर पढ़ने बैठ जाता। उसके लिए भौतिक-शास्त्र कठिन पड़ रहा था सो उसने इसकी एक अलग से ट्यूशन ले रखी थी। कुल मिलाकर, तेजस अपने माता-पिता के सपने को पूरा करने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा था। राधा भी उसके साथ रात-रात भर जगा करती, कभी उसे चाय-कॉफी बनाकर देती, कभी उसका माथा दबाती। मेडिकल की परीक्षा के करीबन एक माह पूर्व तेज़स को घबराहट रहने लगी, अक्सर वो रो पड़ता, राधा उसे दिलासा देती।

परंतु सारी मेहनत और कोशिश के बावजूद, तेज़स मेडिकल प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सका जिसके कारण पूरे घर पर उदासी छा गयी थी। इस पहली असफलता पर तेज़स के साथ-साथ राधा भी बहुत रोई थी।

खैर, तेज़स के माता पिता ने उसे इस परीक्षा के लिए दोबारा तैयारी शुरू करने की सलाह दी और इस बार शत-प्रतिशत सफलता की गारंटी हेतु उसका दाखिला कोटा के एक अच्छे कोचिंग इन्स्टिट्यूट में करा दिया था।

तेज़स इससे पहले कभी घर से दूर नहीं रहा था। नया माहौल, पढ़ाई का तनाव और असफलता के भय से उस पर अक्सर निराशा की भावना हावी रहती। उसे हमेशा यह भय सताता कि अगर इस

बार भी उसे सफलता न मिली तो क्या होगा? मेडिकल की प्रवेश परीक्षा के दो महीने पहले ही एक दिन जब उससे तनाव न झेला गया तो उसने कीटनाशक पदार्थ खाकर अपनी जीवन लीला समाप्त करने की कोशिश की। संयोगवश, उसके सहपाठी ने समय पर उसके कमरे में पहुँचकर उसे अस्पताल पहुँचाया और उसके माता-पिता को सूचना दी थी।

राधा बेहोश पड़े बेटे के पास बैठी, आँखो में आँसू लिए सोच रही थी कि क्या वास्तव में तेज़स डॉक्टर बनना चाहता था? उसके मन की थाह तो कभी उन माता-पिता ने ली ही नहीं थी, अपने बेटे को डॉक्टर के रूप में देखने के अरमानों ने उन्हें इतना अंधा बना दिया था कि उन्होने कभी तेज़स से उसकी इच्छाओं और सपनों के बारे में पूछा ही नहीं था।

उनके प्यारे बेटे ने उनके अरमानों को पूरा करने के लिए अपनी जिंदगी की आहुति दे दी थी। राधा रो-रो कर ईश्वर से तेज़स की जिंदगी की प्रार्थना करने लगी। अब उसे केवल अपना पुत्र वापस चाहिए था और उसके मन में कोई अभिलाषा शेष न थी। भगवान से तेज़स की जिंदगी की भीख माँगते- माँगते रात

कट गयी थी। सवेरे तेज़स को होश आ गया, उसकी आँखे अपने माता पिता को देखकर भर आईं, उसके मुँह से निकला सॉरी माँ पापा, मैं आपकी उम्मीदों पर पूरा नहीं उतर पा रहा हूँ, मैं शर्मिंदा हूँ, मुझे माफ़ कर दीजिए।

राधा ने दौड़कर अपने बेटे को गले लगा लिया। उसके आँसू पोंछते हुए बोली, शर्मिंदा तो हम हैं बेटा, सफलता को हासिल करने की दौड़ में हम तुम्हें यह सिखाना तो भूल ही गये कि सारी सफलताओं से कहीं ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हमारा जीवन है। किसी भी मुकाम को पाना या न पाना तो जीवन का छोटा सा हिस्सा मात्र है, उसके लिए यों जीवन को दाँव पर लगाने का कोई औचित्य नहीं है। मेरे लाल, हमारे लिए तेरी खुशी सबसे महत्त्वपूर्ण है, तू अब अपनी इच्छानुसार अपनी मंजिल़ चुन, हम सदैव तेरे साथ हैं।

जीवन की इस सच्चाई ने इस परिवार को नया अध्याय पढ़ा दिया था।

❑❑

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

नटखट बचपन की उंगली थामकर
ज्ञान के समंदर को
किताबों से निकालकर
नासमझ को समझदार बनाया।

लडखडाते कदमों को राह दिखाकर
सोच पर विवेक का ऐनक लगाकर
धुंधली नज़र को दूरदर्शी बनाया।

सहृदय व्यवहार का पाठ पढ़ाकर
संस्कार के सांचों में ढ़ालकर
मानव से इंसान बनाया।

विधाता भी न ये कर पाया
हर कृति को श्रेष्ठ बनाया
गुरूवर के चरणवंदन से
जीवन का उपवन महकाया।

❑❑

बलिदान याद दिलाते हैं

मनु प्रताप सिंह चींचडौली पुत्र श्री जगदीश सिंह शेखावत, हवलदार, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

हर गाँवों में मिलते मंदिर,
खड़े महागौरव लिये।
बलिदान याद दिलाते है,
हमें एक परम्परा दिये।।

नहीं हुए थे कारनामें जग में,
पर हुए इस माटी में।
बिना शीश चलती तलवारें,
कल्ला हुए थे इस माटी में।

बलिदान का वक्त आया तो,
परवानों ने कितने शीश दिये।
बलिदान याद दिलाते हैं,
हमें एक परम्परा दिये।।1।।

अरावली के हर कोने में,
प्रताप का जीवन बीता था।
साँगा की महत्वाकांक्षा ने,
पूरा राजपूताना जीता था।।

मां भारती गर्व में,
हर माँ ने कितने वीर दिये।
बलिदान याद दिलाते हैं,
हमें एक परम्परा दिये।।2।।

अभिमान से रणथंभौर है कहता,
हुए यहाँ हम्मीर हठीले।
जौहर-शाकों ने मांग भरी,
सिंदूरी हुए थे कितने क़िले।।

स्वधर्म के लिए लड़ाई लड़ी,
इतिहास रचकर चले गये।
बलिदान याद दिलाते है,
हमें एक परम्परा दिये।।3।।

पद्मिनी का जौहर आज,
पुकारें पवित्र सतीत्व को।
देखा है अतीत ने शीशदान,
हाड़ा रानी के पत्नित्व को।।

शमां में जलकर वो,
इतिहास उज्ज्वल बना गये।
बलिदान याद दिलाते हैं,
हमें एक परम्परा दिये।।4।।

दिनांक 07.08.2021 एवं 08.08.2021 को श्री एम. अजीत कुमार, अध्यक्ष सीबीआईसी, नई दिल्ली का उदयपुर दौरा

दिनांक 09.08.2021 को श्री एम. अजित कुमार, अध्यक्ष, सीबीआईसी, नई दिल्ली का जयपुर दौरा

CUSTOMS (PREVENTIVE) COMMISSIONERATE, JODHPUR
DELHI (PREVENTIVE) ZONE
WELCOMES
SH. M. AJIT KUMAR
CHAIRMAN, CBIC
FOR THE LAUNCH OF EDCS AT JAIPUR

आजादी का अमृत महोत्सव
स्वतंत्रता के 75 वर्ष का उत्सव
AWARENESS & PREVENTION OF
DRUG ABUSE
Monday, 09 August 2021

आजादी का अमृत महोत्सव
स्वतंत्रता के 75 वर्ष का उत्सव

जीएसटी दिवस समारोह - 2021

जीएसटी दिवस समारोह – 2021

कार्यालय में आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम की झलकियाँ

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के दौरान कार्यालय में आयोजित रक्तदान शिविर

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत शिक्षक दिवस के अवसर पर सीजीएसटी आयुक्तालय, जयपुर द्वारा रा.बा.उ.मा. विद्यालय सी-स्कीम, जयपुर में आयोजित गतिविधियों की झलकियां

संस्मरण

ऋतु अग्रवाल, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

(1)

पढ़ाई और नौकरी

मैं बचपन में अति-साधारण दिखने वाली असाधारण लड़की थी। पिताजी स्कूल में भौतिकी पढ़ाते थे और बाद में प्रिंसिपल बन कर रिटायर हुए। चूंकि पिताजी की सरकारी स्कूल की नौकरी थी और उनका कोई राजनैतिक संबंध नहीं था अत: उन्होंने लगभग 20 वर्ष की नौकरी जयपुर से बाहर अलग-अलग स्थानों पर स्थानांतरित होते हुए की। अत: आप लोग समझ सकते हैं कि एक छोटी-सी तनख्वाह की नौकरी जिसमें दो अलग-अलग स्थानों पर डबल इस्टैब्लिशमेंट का खर्चा होता हो तो पारिवारिक आर्थिक स्थिति बहुत मामूली रही होगी। मेरी सारी पढ़ाई गांधीनगर के बालिका सरकारी विद्यालय में हुई। इसके पश्चात् कानोड़िया कॉलेज से बीएससी किया और राजस्थान विश्वविद्यालय में एमएससी केमिस्ट्री में एडमिशन लिया। बीएससी के दौरान सभी किताबें कॉलेज के बुक बैंक से उपलब्ध हो गई थी परंतु एमएससी के दौरान किताबें खुद से खरीदी जानी आवश्यक थीं जो काफी महंगी थीं। परंतु जुलाई से नवंबर तक घर की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि इतनी महंगी किताबें मैं खरीद पाती। प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा सिर पर थी और किताबों का दूर-दूर तक नामोनिशान न था। अत: एमएससी छोड़कर मैंने एम.ए. इकोनॉमिक्स नॉन-कॉलेजिएट के तौर पर फॉर्म भरा और एम.ए. इकोनॉमिक्स किया। अब सोचती हूं तो बहुत अजीब लगता है और अविश्वसनीय भी लगता है कि थोड़े से पैसों के लिए क्या लोगों को ऐसे अपनी राह बदलनी पड़ती है? खैर वह भी एक दौर था गुज़र गया। उसके बाद मेरा बचपन का सपना था कि मैं कोर्ट में जज बनूं। बस वही सपना पूरा करने के लिए मैंने एलएलबी में एडमिशन ले लिया और एलएलबी किया। एलएलबी की पढ़ाई बहुत मजेदार रही। परंतु इस दौरान भी पारिवारिक आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी अत: मैंने नौकरी हेतु कुछ प्रतियोगी परीक्षाओं में आवेदन किया। उसी दौरान मैंने एलआईसी की भी परीक्षा दी। चूंकि मेरा पेपर काफी अच्छा हुआ था मुझे पूरी उम्मीद थी कि मेरा सिलेक्शन हो जाएगा। लिखित परीक्षा के बाद साक्षात्कार हुआ और साक्षात्कार के बाद फाइनल लिस्ट में मेरा नाम नहीं था इससे मुझे बहुत निराशा हुई और मैंने एलआईसी के ऑफिस जाकर कारण पता किया। तो पता चला कि वहां पर इंटरव्यू का वेटेज बहुत ज्यादा था अत: सभी उम्मीदवार जो सेलेक्ट हुए थे किसी न किसी प्रकार उनकी सिफारिश थी। यद्यपि माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा साक्षात्कार के लिए अधिकतम 20 अंक निर्धारित किए जा चुके थे परंतु उसे ताक में रखकर एलआईसी में 50 अंक साक्षात्कार के लिए रखे गए थे। इस प्रकार सुप्रीम कोर्ट की रूलिंग का

वायलेशन हो रहा था अत: मैंने हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और हाई कोर्ट में मेरे लिखित परीक्षा के एवं इंटरव्यू के अंक एलआईसी द्वारा दिखलाए गए। उन्हें देखने के पश्चात राजस्थान हाई कोर्ट द्वारा एलआईसी को निर्देश दिए गए कि मुझे 15 दिन में अपॉइंटमेंट दिया जाए। हाईकोर्ट में मेरा केस मैंने खुद ही लड़ा, वैसे भी वकील को देने के लिए मेरे पास पैसे भी नहीं थे। उसका निर्णय भी बहुत शीघ्र किया गया उसे देखते हुए मैं बहुत उत्साहित थी परंतु यह उत्साह ज्यादा दिन ना टिका क्योंकि एलआईसी ने डबल बेंच में अपील कर दी थी और शहर के नामी एवं वरिष्ठ वकीलों को मेरे समक्ष खड़ा कर दिया गया। तब मुझे पहली बार एहसास हुआ की जज नामी-गिरामी वकीलों के विरुद्ध एक साधारण सी लड़की के पक्ष में फैसला नहीं देना चाहते यद्यपि वे जानते थे कि मैं सही थी और उनका निर्णय सुप्रीम कोर्ट में एक मिनट भी नहीं टिक सकता था। परंतु उस समय सुप्रीम कोर्ट तक दौड़ लगाने की मेरी औकात ही नहीं थी। वह लम्हा मेरे जीवन में फिर एक मोड़ लेकर आया और मैंने कसम खाई कि मैं ना तो जज बनूंगी और ना ही वकील क्योंकि बाहर से खूबसूरत नजर आने वाली कोर्ट की बड़ी-

बड़ी बिल्डिंगों में केस लड़ने वाले वकील बहुत झूठ बोलते हैं और किसी अच्छे जज के लिए भी यह निर्णय करना मुश्किल होगा कि कौन सच बोल रहा है या कम झूठ बोल रहा अत: ऐसी स्थिति में मैं किसी को कैसे न्याय दिला पाऊंगी या न्याय कर पाऊंगी। उस समय मेरी आयु लगभग 22-23 वर्ष की थी अत: इतनी ही समझ थी। इसके पश्चात जब मुझे अपनी वर्तमान नौकरी का नियुक्ति पत्र मिला तो मैंने इसे ही स्वीकार करना बेहतर समझा। इस नौकरी को करते हुए मुझे कुछ बहुत ही बेहतरीन दोस्त मिले और कुछ बहुत ही निकृष्ट लोगों से भी मेरा वास्ता पड़ा और कुछ खट्टे मीठे कड़वे अनुभव जुड़ते गए।

शायद यही जिंदगी है।

ज़िंदगी में बहुत ज़द्दोज़हद रही यारों
खुदा का शुक्र है पर गुज़र ही गई।

16/06/2021

(2)

आखिरी वार्तालाप

उस दिन शायद शाम के चार बज रहे थे। फोन की घंटी बजी दूसरी तरफ से एंबुलेंस की आवाज आ रही थी। ऐसा मेरे साथ पहली बार हुआ था। कभी सोचा ही नहीं था कि ऐसा भी होगा। मुझे बताया जा रहा था कि मां की तबीयत ठीक नहीं है उन्हें अस्पताल ले जा रहे हैं।

आनन-फानन में शाम की फ्लाइट से मुंबई पहुंची, सीधा नानावती हॉस्पिटल जहां वो वेंटिलेटर पर आईसीयू में भर्ती थीं और अचेत थीं। रात के लगभग ग्यारह बज रहे थे। दूसरे दिन सुबह डॉक्टर ने बताया कि वे कुछ नहीं बता पाएंगे। कब? कैसे? कितने दिन? कुछ नहीं।

खैर, पेशेंट से मिलने का समय निश्चित था, मैं अंदर गई मां को आवाज लगाई ''मम्मी, देखो मैं आई हूं, ऋतु।'' कोई जवाब नहीं आया। पुन: पुन: आवाज लगाई। थोड़ी सी हरकत हुई। होंठ फड़फड़ाए। अगली आवाज पर उन्होंने आंखें खोली, एक नजर भर कर देखा, शायद पहचाना भी। कुछ बोलने की भरसक कोशिश की। पर बमुश्किल होंठ कंपकपा कर रह गए। बोल नहीं पाने की बेबसी आंखों में उतर आई और आंसू बनकर बह गई और आंखें पुन: बंद हो गईं। उसके बाद कई बार पुकारा पर शायद वे आवाजें उन तक पहुंच नहीं पाईं। नर्स ने आकर कहा पेशेंट से मिलने का समय खत्म हो गया है और मैं बाहर आ गई। मैं आंसुओं की भाषा नहीं समझ पाई और वो आज भी मेरे लिए पहेली हैं। मैं घर में तीन भाई-बहनों में सबसे छोटी थी और मुझे लगता है शायद अपने मम्मी-पापा के सबसे करीब भी थी। अगले दिन फिर डॉक्टर आए और अपनी बात दोहरा कर चले गए। तीसरे दिन डॉक्टर ने कहा शायद 72 घंटे। उनकी हालत लगातार बिगड़ती जा रही थी सोडियम घट रहा था ब्लड प्रेशर और पल्स भी।

मां मस्कुलर डिस्ट्रॉफी की पेशेंट थीं और लगभग 40 साल उन्होंने बिस्तर पर गुजारे थे पर मुस्कुराते हुए !! जो किसी अजूबे से कम नहीं था। इतनी खराब हालत और इतनी ज़िंदादिली !!! समझ नहीं आ रहा था यह उनकी मुक्ति का समय था या मृत्यु का?

जानती थी जिंदगी उनके लिए कभी फूलों की सेज तो न थी पर जब वे मेरे साथ बड़ौदा (वड़ोदरा) में रहीं तो वे अक्सर कहा करती थीं कि वह उनकी जिंदगी का गोल्डन पीरियड था। उस दौरान ज़िंदगी ने मुझे बेहतरीन दोस्त दिए और बेहतरीन पड़ोसी भी। वे अक्सर मेरी उपस्थिति-अनुपस्थिति में आते और मां से घंटों बातें करते। हंसते खिलखिलाते जैसे वो उनकी हमउम्र हों। वे सभी मां की जिंदादिली पर चकित होते और अब भी होते हैं। उस वक्त मेरा एक ही सपना था कि काश हमारा यह गोल्डन पीरियड कभी खत्म ना हो। पर ऐसा थोड़े ही होता है। बुरा वक्त गुज़र जाता है तो अच्छे को भी गुजरना ही होता है। भाई की और मेरी शादी हो गई। यद्यपि मैंने विवाह पूर्व पति और मां से वादा लिया था कि वो हमारे साथ ही रहेंगी। पर शादी के समय मां ने अपने बचे हुए सभी गहने देकर उस गोल्डन पीरियड का कर्ज़ उतार दिया आखिर बेटी के घर का खाने के संस्कार नहीं थे ना उनके। मैं चाहती थी कि मैं उन्हें एक और लंबा गोल्डन पीरियड दे सकूं पर ऐसा नहीं हुआ।

72 घंटे बीत चुके थे। डॉक्टर ने कहा, अब कभी भी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उनकी जान कहां अटकी है। तभी अनायास मुझे याद आया उन्होंने मुझसे कई बार नेत्रदान करने के लिए जिक्र किया था परंतु मैंने पंजीकरण नहीं करवाया था। अत: मैंने नेत्रदान के लिए उस समय वहां उपस्थित डॉक्टर से बात की तो उन्होंने उसकी व्यवस्था करा दी।

यह सब होते-होते लगभग शाम के चार-पांच बज गए होंगे। उस समय मेरा अधिकतर समय अस्पताल में ही व्यतीत हो रहा था। रात में भी मैं और भाई रुकते। उसी दिन रात को लगभग बारह बजे नर्स ने कहा बेड नंबर फलां के साथ कौन है? पेशेंट का बीपी और पल्स गिर रहा है, जल्दी आओ। मैं भाई को बुलाने के लिए फोन ढूंढने लगी परंतु हड़बड़ाहट में मेरे बैग में रखा फोन ढूंढकर बात करने में मुझे दो-तीन मिनट लग गए। फिर फोन करके मैं अंदर गई तब तक मॉनिटर की सारी रेखाएं सपाट हो चुकी थीं। आईबैंक वाले आकर कॉर्निया लेकर चले गए। घर पर बात करके यह तय हुआ कि मां के पार्थिव शरीर को सुबह घर ले जाया जाए अत: उनके पार्थिव शरीर को मोर्चरी में रखवा कर हम अस्पताल की बेंच पर आकर बैठ गए। जुलाई का महीना था उस समय बहुत शांत और शीतल बयार चल रही थी हवा के हर झोंके में मैं मां का स्पर्श महसूस कर पा रही थी।

उन्हें गए दस वर्ष से अधिक हो गए। पर आज भी उनका आँखों से बात करने का वह अंतिम और संक्षिप्त वार्तालाप जब तब मेरी आंखों के सामने जीवंत हो उठता है।

वो लम्हे वो पल हम हरदम याद करेंगे,

जब तुम ही चले गए तो किस से फरियाद करेंगे ।

❑❑

'आज' की किताब

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

मन की पुरानी अलमारियों में
रखीं हैं कुछ किताबें

बचपन की नटखट यादों वाली
जवानी के हसीन सपनों वाली
बुढ़ापे की अनंत चिंताओं वाली

कौनसी किताब पढ़नी हैं तुम्हे
नहीं समझ पाते तुम
तो मानो, मन की बात

पुरानी अलमारियों से निकालो
'आज' की किताब।

तहें करो इसकी
दर्पण की तरह साफ

भर लो
आज के लम्हों की खुशबू
सांसों के बागों में

और झूम जाओ
बचपन की यादों में
खो जाओ
जवानी के हसीन सपनों में
भूल जाओ
बुढ़ापे की चिंताओं को

'आज' को ही बहने दो
रगों में
अपने लम्हों की

कल
न था कभी
न होगा वो कभी
'आज' ही बहेगा तुममें
रहेगा हमेशा वो ही
चिरकाल तक

❑❑

विशेष

निखिल भारद्वाज भाई श्रीमती नीता शुक्ला, वरिष्ठ अनुवादक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

'जिंदगी बड़ी होनी चाहिये लम्बी नहीं' यह एक पुरानी फिल्म का बहुत ही प्रसिद्ध संवाद है। कहने को तो मात्र एक संवाद है पर इसमें एक बहुत ही सुंदर संदेश छिपा है जिससे हम सभी भली-भांति परिचित हैं। इसी संवाद से प्रेरणा लेकर कुछ विचार व्यक्त करने का प्रयास कर रहा हूं। आज के समय में हम सभी अत्यधिक व्यस्त हैं। बहुत ही कम लोग हैं जिनके पास समय है। सभी जिंदगी की दौड़ भाग में व्यस्त हैं और यदि हम सही में सोचें तो हम पाएंगे कि हम व्यस्त हैं किसमें? जिसमें भी व्यस्त हैं इसी को बोलते हैं ''आम जिंदगी'' कैसे? वो ऐसे कि हम पैदा हुए, हमारा नामकरण, विद्यालय गमन, कॉलेज गमन, नौकरी का लगना, विवाह होना तदुपरांत बच्चों का होना, फिर बच्चों के विद्यालय में नामांकन तथा फिर उनकी शादी आदि-आदि। यह सब क्या है? यह सब आम जिंदगी ही तो है क्योंकि यह सब तो सब लोग कर ही लेते हैं। कुछ गिर-पड़कर, कुछ हंसते-खेलते, कुछ ले देकर। मैं यह नहीं कहता कि इसमें कोई परिश्रम नहीं लगता या समय नहीं लगता। सब कुछ लगता है और व्यक्ति इन्हीं सब कर्मों को करते-करते वृद्ध हो जाता है। फिर अंत में मनुष्य मृत्यु की प्रतीक्षा करता रहता है और प्रार्थना करता है कि हे प्रभु, मेरे प्राण आराम से हर लेना। हर आदमी की यहीं कहानी है ।

बात करें जीवन की तो हम सभी जीवन को जीना तो भरपूर चाहते हैं परंतु जी नहीं पाते क्योंकि हम अपनी जिम्मेदारियों को ही पूरा करते हैं। इनको पूरा करने में ही अपना संपूर्ण जीवन गुजार देते हैं। मैं जो कहना चाहता हूं वह यह है कि जीवन को ना तो बड़ा बनाओ ना ही लंबा। जीवन को विशेष बनाओ और जीवन को विशेष बनाने के लिए कुछ विशेष भी करना पड़ेगा। दूसरी भाषा में कुछ असाधारण एक्स्ट्राऑर्डिनरी करना पड़ेगा। अब विशेष क्या हो सकता है? भगवान जब हमारा निर्माण करता है तो हमको कुछ ना कुछ विशेषता प्रदान करके ही पृथ्वी पर भेजता है तथा कुछ विशेषताएं हम अपने अंदर विकसित करते हैं । बस इन विशेषताओं को ही हमें पहचानना है तथा इसी दिशा में कार्यरत होना है। मैं तो यह समझता हूं कि आज के तकनीकी तथा डिजिटली युग में कुछ भी करना या कुछ भी विशेष करना उतना भी कठिन नहीं है । कई बार विशेष करने के लिए अपने शांत एवं सरल जीवन में अशांति को भी न्यौता देना पड़ता है। अगर हम विशेष व्यक्तियों या व्यक्तित्व के उदाहरण देखेंगे तो पाएंगे कि वास्तव में उन सभी ने बहुत कुछ त्याग किया, बहुत कुछ खोया है। बिना किसी मतलब के अच्छी खासी जिंदगी में अशांति पैदा कर ली परंतु निश्चय ही सभी ने विशेष ख्याति प्राप्त की और हां, सभी का जीवन विशेष ही है । स्वामी विवेकानंद, शहीद भगत सिंह, गुरूदेव रविंद्र नाथ टैगोर, जेफ बेजोस, एपीजे अब्दुल कलाम आदि सभी ने कुछ तथा बहुत कुछ विशेष किया है। इसीलिए इन महान विभूतियों ने विशेष शब्द को परिभाषित किया है।

अब आनंद फिल्म के उसी संवाद को नई तरह से लिखता हूं:-

''जीवन छोटा हो या बड़ा हो परंतु विशेष होना चाहिए और विशेष बनने के लिए कुछ विशेष करना पड़ेगा।''

❑❑

मन की भाषा, प्रेम की भाषा।
हिंदी है भारत जन की भाषा।।

अहसास

दीपक पंजाबी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

दबे पाँव आते हैं दिल में नासूर बन दहकने को
जहन में बस जाते हैं कसक बन ताउम्र खटकने को

सायों सा गहरे उतर कर दीवारों सा दरकते हैं
आस्तीन में जहरीले सांपों सा आहिस्ता सरकते हैं

पल में अपना बना लेना इनकी पहचान होती है
लबरेज़ प्यालों की मदहोशी पे गुरबत कुर्बान होती है

जब कालिख में सोने सी चमक हो तो नफीस इंसान बदनुमा जाता है
दहकती दोपहरी में सहरा में पानी देख प्यासा जान गँवा जाता है

इस दौर के कुछ गिरेबान अपने होने भर से ही मदहोश हैं
वक़्त ही बताता है कि कौन अहसानमंद और कौन फरामोश है

मेरे वजूद की वजह बनते मरासिम के लिए
मेरे अहसासों की ज़मीन और जूनून का आसमां है

और बाकी के बेमुरव्वत रिश्तों के लिए
मेरी गैरत की दीवारों के पीछे एक बड़ा सा कब्रिस्ताँ है

❑❑

देवदूत

देव दत्त शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

देव घर पर बैठा गाना गुनगुना रहा है 'ठंडी-ठंडी हवा मे दिल ललचाये हाय रे जवानी दीवानी' तभी दरवाज़े पर दस्तक होती है। देव दरवाज़ा खोलता है।

देव – अरे डल्ली तू !!!!

डल्ली – प्रणाम भैया।

देव – खुश रहो भाई। कैसा है तू डल्ली, आज इतने दिनों बाद कैसे याद आई हमारी। ..... माँ देखो तो कौन आया है।

डल्ली – बुआजी ढोक। कैसी हो बुआ।

चंदा – खुश रहो बेटा। कैसा है रे मेरे बच्चे तू। इस बुआ की याद कैसे आ गयी। इस बार तो बड़े दिनों में आया। अभी से ही ये हाल तो शादी के बाद तो बुआ को पूछेगा भी नहीं। खैर ये सब छोड़ ये बता घर पर सब कैसे हैं।

डल्ली – बुआ सब ठीक हैं। वैसे ही मन किया जयपुर घूम आऊँ सो बस में बैठा और यहाँ आ गया। अलवर से यहाँ तक आने में समय ही कितना लगता है यही कोई 5 घंटे।

चंदा – चल मैं तेरे लिए चाय नाश्ता बनाती हूँ तुम दोनों भाई बातचीत करो।

देव – और सुना डल्ली क्या नया चल रहा है। अलवर में कैसा चल रहा है।

डल्ली – कुछ नहीं भैया वही घोड़े वही मैदान। घर से कॉलेज – कॉलेज से घर। भैया इस बार तो आपको भी अलवर आये हुए काफी समय हो गया। पहले तो आप बीच-बीच में आ जाया करते थे। घरवाले भी आपको बहुत याद कर रहे थे।

देव – क्या बताऊं यार अभी नयी नयी नौकरी लगी है इसीलिए छुट्टियों से ज़रा परहेज़ ही रखता हूं। अब तू तो जानता ही है अलवर आओ तो दो तीन दिन तो चाहिए ही। सब रिश्तेदारों से मिलना, सिलीसेढ़, सरिस्का और पांडुपोल के मनोरम वातावरण में दो चार घंटे सुकून से बिताना। (आह छोड़ते हुए) कितना अच्छा लगता है ना सब।

डल्ली – सुना है भैया आपने नयी मोटर साइकिल खरीदी है। क्यों न अपन मोटर साइकिल पर सरिस्का घूम कर आयें। पांडुपोल के हनुमान जी के दर्शन भी कर आयेंगे। मौसम भी अच्छा चल रहा है, हल्की-हल्की ठण्ड भी पड़ने लगी है। बड़ा मज़ा आएगा भैय्या।

देव – ठीक है चल बनाते हैं सरिस्का का प्रोग्राम। बहुत दिन हो गए घर से बाहर निकले। देख आज है शुक्रवार कल शनिवार और परसों रविवार यानी कल परसों दो दिन की छुट्टी। चल कल सुबह ही चलते हैं। शनिवार बालाजी का भी वार है बहुत लोग आयेंगे। मज़ा आएगा।

मोटर साइकिल की ड्राइव का आनंद ही कुछ अलग होता है।

चंदा – लो बच्चो चाय नाश्ता तैयार, है कर लो। फिर डल्ली तू थोड़ा आराम कर ले थक गया होगा शाम हो गयी है फिर मैं खाने की तैयारी करती हूँ। ये तो बता तेरे पापा कैसे हैं। अब तो केवल वो रक्षाबंधन पर ही आता है। उसको भी यहाँ भेज देना मिल जायेगा।

डल्ली – बुआ पापा एकदम ठीक हैं। आपको प्रणाम कहलवाया है। आपकी हमेशा तारीफ ही करते रहते हैं। हमेशा कहते रहते हैं देखो जीजी ने कितने अच्छे से अपने बच्चे पाले हैं कितनी अच्छी तालीम दी है बच्चों को। जीजाजी तो हमेशा ही बाहर रहे हैं पर जीजी ने एक जगह रहकर अपने बच्चों को पाला है। परिवार का हर व्यक्ति आपकी तारीफ करता है।

चंदा – मैं तो कहती हूँ तू भी यही आकर पढ़ ले। तेरे ये बड़े भाई-बहिन तेरा ध्यान रखेंगे और तुझे मार्ग दर्शन भी देते रहेंगे।

डल्ली – बुआ इस साल तो अलवर ही पढ़ना पड़ेगा अगले साल सोचेंगे। हाँ बुआ ठण्ड बढ़ने लगी है, सो ये शाल पापा ने आपके लिए भिजवाई है।

चदा – अरे बड़ा प्यारा शाल है। पर वो मुझसे छोटा है, मुझे अच्छा नहीं लगता उससे कुछ भी लेना। अब उसकी भी जिम्मेवारियां बढ़ने लगी हैं।

डल्ली – रख लो बुआ बड़े प्रेम से भेजा है। वैसे भी समय को देखते हुए लगता है कि ये लेन देन की रिवाज़ बहुत जल्दी सिमटने वाली है। (सब हँसते हैं)

देव – माँ हम दोनों कल मोटर साइकिल पर पांडुपोल जाना चाह रहे हैं, डल्ली की बड़ी इच्छा है, आप कहो तो हम चले जायें।

चंदा – नहीं नहीं, मैं तुम्हें कही नहीं जाने दूँगी। उस सड़क पर बहुत ट्रैफिक रहता है। ट्रक बस जैसे बड़े-बड़े वाहन चलते रहते हैं उस रास्ते पर। तुम्हारे पापा भी नहीं है अभी यहाँ, मुझे बहुत डर लगता है, नहीं मैं तुम लोगों को कही नहीं जाने दूँगी ।

देव – माँ तुम चिंता मत करो मैं बड़ी सावधानी से मोटर साइकिल चलाऊंगा। ट्रैफिक ज्यादा होता है तो क्या सड़कें भी तो चौड़ी होती हैं। लोगबाग़ तो पहाड़ी इलाकों पर मोटर साइकिल पर चले जाते हैं हम तो केवल यहीं पास तक ही तो जा रहे हैं। तुम बिल्कुल चिंता मत करो हमें कुछ नहीं होगा। हम पूरी सावधानी बरतेंगे। अगर कुछ होना होगा तो वो तो यहाँ भी हो जायेगा। जाने दो न माँ बड़ी मुश्किल से मूड बना है।

डल्ली – हाँ बुआ जाने दो न प्लीज। हम अपना पूरा ख्याल रखेंगे। वैसे भी हम बालाजी के दर्शन को ही तो जा रहे हैं तो हमारे साथ कुछ गलत तो हो ही नहीं सकता और फिर हम सुबह गए और शाम को वापिस।

देव और डल्ली – जाने दो न हमें प्लीज, प्लीज प्लीज ।

चंदा – ठीक है बाबा चले जाना। पर वादा करो कि मोटर साइकिल तेज़ नहीं चलाओगे और सुबह जाकर शाम तक वापिस आ जाओगे।

देव – बिलकुल तेज़ नहीं चलाएंगे माँ हम अच्छे से जायेंगे।

(अगली सुबह)

चिड़िया चहचहा रही हैं। मंदिर की घंटिया बज रही हैं।

देव – (अंगड़ाई लेते हुए) डल्ली उठ सुबह हो गयी है, चलना नहीं है क्या। चल मेरे भाई उठ जा और जल्दी-जल्दी तैयार हो जा। अपन चाय नाश्ता करके करीब दस बजे के आसपास निकलते हैं, शाम तक लौटना भी तो है मेरे भाई ।

(सुबह दस बजे)

देव – माँ हम चलते हैं। तुम किसी भी प्रकार की चिंता मत करना हम शाम को सात-आठ बजे तक आ जायेंगे।

चंदा – ठीक है बेटा पर ज़रा ध्यान से जाना। बीच में कोई बूथ आये तो फ़ोन जरूर कर देना।

डल्ली – अच्छा बुआ चलते हैं, ढोक।

चंदा – खुश रहो बेटा। भगवान् तुम्हारी यात्रा सफल करे।

देव – (मोटर साइकिल चलाते हुए) अच्छा किया डल्ली तूने जो ये प्रोग्राम बना लिया। मुझे भी कई दिनों से लग रहा था कि कहीं घूम के आया जाये। आज मौसम भी अच्छा है और इसी बहाने इस मोटर साइकिल की भी टेस्टिंग हो जाएगी। यार ये हाईवे पर भी न मोटर साइकिल चलाने का मज़ा ही कुछ और है। जैसे चाहो दौड़ाओ गाड़ी को।

डल्ली – भैया मोटर साइकिल थोड़ा धीरे चलाओ, याद है न बुआ ने क्या कहा था। गाड़ी धीरे चलाना।

देव – सही कहता है डल्ली तू। हाईवे पर एक्सीडेंट का खतरा बहुत बढ़ जाता है । लोग तेज चलाते हैं और हादसों का शिकार होते हैं। भाई सड़क पर कोई गाय, भैंस भी आ सकती है और अपने वाहन की रफ्तार तेज़ होने के कारण हमें सँभालने का समय ही नहीं मिलता और हम हादसों के शिकार हो जाते हैं। (मोटर साइकिल की आवाज़ आती रहती है)

देव – डल्ली अब हम सरिस्का में दाखिल हो रहे हैं। कितना घना जंगल है यहाँ। अब हम थोड़ी देर में ही पांडुपोल पहुँच जायेंगे।

डल्ली – वाह कितना अच्छा नज़ारा है। कभी-कभी तो लगता है कि ऐसी ही जगह पर अपना घर होता तो कितना मज़ा आता।

देव – सही कह रहा है डल्ली प्रकृति की गोद में एक अलग ही सुकून मिलता है। पक्षियों की चहचाहट और एक दम शांत वातावरण। ले भाई पांडुपोल का मंदिर भी आ गया आ पहले दर्शन कर लेते हैं। एक मिनट मैं ज़रा प्रसाद भी ले आता हूँ। (मंदिर की घंटियां बज रही हैं)

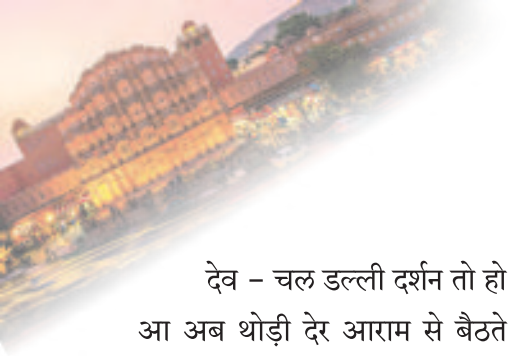

देव – चल डल्ली दर्शन तो हो गए आ अब थोड़ी देर आराम से बैठते हैं। पास ही झरना बह रहा है वहां बैठते हैं। (झरने की आवाज़) ले आ यहाँ आराम से बैठते हैं।

डल्ली – भैया पानी तो बहुत ठंडा है। थोड़ी देर पैर पानी में डाल दो सारी थकान दूर हो जायेगी ।

देव – मुहं हाथ भी धोकर इस चट्टान पर कमर सीधी करते हैं। वाह कितनी मजेदार जगह है ये तो, तरह–तरह के पक्षियों की आवाज़ें, दूर हिरण, नील–गाय, बन्दर आदि भागदौड़ कर रहे हैं। थोड़ी देर आँख बंद करके इन लम्हों का आनंद लिया जाए।

डल्ली – चलो भैया बहुत समय हो गया अब चलने का मानस बनाते हैं। बहुत दूर जाना है। थोड़े समय बाद ही शाम हो जाएगी। समय से नहीं लौटे तो बुआजी और डांटेगी।

देव – ठीक कहता है डल्ली चल अब चलते हैं। मन तो ऐसा कर रहा है कि कुछ देर और यहाँ रुक जाएं पर अब रुकना ठीक नहीं है। रात में हाईवे पर ट्रैफिक भी बहुत होगा। (मोटर साइकिल स्टार्ट करने की आवाज़) चल भाई डल्ली बैठ जा। सही लगी न तुझे ये मोटर साइकिल।

डल्ली – एकदम मस्त भैया। मैं भी ये ही खरीदूंगा।

देव – चल अब शांति से बैठ जा देख सूरज ढलने को है और ठंडी–ठंडी हवा चल रही है प्रकृति का आनंद ले और हाँ अगर कोई जानवर दिखाई दे तो जरूर बताना।

(देव गुनगुनाता है तुम भी चलो हम भी चले चलती रहे .....)

डल्ली – भैया देखो वह लोमड़ी बैठी है दिखाई दी?

देव – कहाँ है कहाँ है ?

डल्ली – देखो भैया, वो चट्टान दिख रही है न उसी पे बैठी है, दिखी?

देव – हाँ दिखी, बहुत ही सुन्दर। कैमरा नहीं है यार नहीं तो फोटो जरूर खींच लेता।

डल्ली – भैया देखो कितनी बड़ी नील गाय। ये तो सड़क की तरफ ही दौड़ती हुई आ रही है।

देव – अद्भुत, बहुत खूब ।

डल्ली – भैया अब क्या इसे ही देखते जाओगे आगे देख के चलाओ वो देखो सामने से एक बस भी आ रही है।

देव – ठीक है भाई अर्रर्र ये क्या हुआ .....

(गाड़ी गिरने की और फिसलने की आवाज, करहाने की आवाज़)

देव – ये क्या मेरे हाथों में से तो खून गिर रहा है, पहले तो उठकर खुद को संभालू, सब ठीक है कोई खास चोट नहीं आई है। डल्ली.... डल्ली तू कहाँ है। डल्ली तू ठीक तो है, बोलता क्यों नहीं।(बस के गुज़रने की आवाज़)

डल्ली – आह (कराहते हुए), भैया मै यहाँ हूँ झाड़ियो में फंसा हुआ।

देव – रुक मेरे भाई मैं आता हूँ तेरे पास, ले पकड़ मेरा हाथ, तेरे तो सर पर चोट लगी है खून बह रहा है, उठ मेरे भाई देख कहीं और तो चोट नहीं लगी ।

डल्ली – नहीं भैया मैं ठीक हूँ। बस सर पर थोड़ी चोट है सर पत्थर से जो टकरा गया था। एक पल के लिए तो मुझे होश ही नहीं रहा। पर ये मोटर साइकिल कैसे स्लिप हो गयी।

देव – पता नहीं कहाँ से एक पत्थर सड़क पर आ गया, मैं तो नीलगाय देख रहा था मोटर साइकिल का अगला पहिया कैसे उस पर चला गया और मोटर साइकिल का बैलेंस बिगड़ गया और स्लिप हो गयी। ये भी अच्छा रहा कि तू झाड़ियों में ही उलझ कर रह गया नहीं तो खाई में गिरता। चल तेरे सर पे रुमाल बाँध देता हूँ।

डल्ली – अब क्या करें भैया?

देव – डल्ली मोटर साइकिल तो चट्टानों से टकरा–टकरा कर कबाड़ा हो गयी है । मुझे नहीं लगता अब ये चलेगी। यहाँ से अभी सरिस्का का गेट भी लगभग चार–पांच किलोमीटर दूर है। देखते हैं कोई भगवान का बंदा लिफ्ट देकर गेट तक पंहुचा दे तो बहुत ही अच्छा रहे। लेकिन जब तक अपने को कोई ऐसा आदमी नहीं मिलता अपने को पैदल ही चलना होगा, तू तैयार है।

डल्ली – हाँ भैय्या आधे घंटे के अन्दर–अन्दर अँधेरा पसर जायेगा। जब तक कोई गाड़ी आती दिखाई दे अपन चलना तो शुरू कर देते हैं। अपने कपड़ों में भी खून लगा हुआ है मैंने तो सुना है जंगली जानवर खून की गंध से शिकार को ढूंढ लेते हैं।

देव – घबराओ मत कुछ न कुछ व्यवस्था तो हो ही जायेगी। हमें जरूर कोई न कोई तो मिल ही जायेगा जो हमें इस जंगल से बाहर पंहुचा सके। जब तक हम बाहर की तरफ चलना शुरू कर देते हैं।

डल्ली – देखो भैया एक गाड़ी आती हुई नज़र आ रही है। इसको हाथ देते हैं शायद ये हमें सरिसका से बाहर पंहुचा सके।

देव – ठीक है आने दे इसको। ले भाई ये आ गयी मै इसे हाथ देता हूँ। रुको रुको भैया।

(गाड़ी रूकती है)

ड्राईवर – क्या बात है भाई।

देव – देखो भैया हमारी मोटर साइकिल स्लिप हो गयी है हमें चोट लगी है। हमें सरिस्का के गेट तक पहुंचा दोगे आपका बड़ा उपकार रहेगा।

ड्राईवर – देखो भाई मैं अभी थोड़ा जल्दी में हूँ, मैं आपकी कोई मदद नहीं कर पाऊंगा। पीछे दूसरी गाड़ी आ रही है आप उनसे मदद ले लेना।

देव – अरे भैया हमारे खून आ रहा है, हमें मदद चाहिए पता नहीं दूसरी गाड़ी कब आये।

ड्राईवर – सॉरी मैं आपकी कोई मदद नहीं कर पाऊंगा।

(ड्राईवर गाड़ी आगे भगा ले जाता है)

देव – चल भाई डल्ली पैदल ही आगे चलते हैं कोई दूसरी गाड़ी आएगी तब देखेंगे।

(थोड़ी देर बाद)

देव – देख डल्ली दूसरी गाड़ी आ रही है। इसको हाथ देता हूँ शायद ये अपने को ले चले।

डल्ली – मुझे भी लगता है ये अपने को जरूर ले चलेगा, आप तो इसे रुकने का इशारा करो।

देव – गाड़ी नज़दीक आ रही है मैं ज़रा हाथ देता हूँ।

(गाड़ी रुकने की आवाज़)

ड्राईवर – क्या चाहिए आप लोगों को।

देव – भैया हमारी मोटरसाइकिल स्लिप मार गयी हमें चोट आयी है हमें इस जंगल से बाहर छोड़ देंगे।

ड्राईवर – भैया दारु पीकर मोटर साइकिल चलाओगे तो ये ही होगा। सुना है पांडुपोल में जो भी मदिरा का सेवन करता है बालाजी महाराज उनका ये ही हश्र करते हैं। दारु पियो तुम और मदद करें हम ऐसा तो कैसे होगा।

(ड्राईवर गाड़ी आगे चलाने लगता है)

देव – अरे भैया सुनो तो हमने कोई दारु–वारु नहीं पी, मदद नहीं करनी तो वैसे ही बता दो। देखा डल्ली कैसे–कैसे कमीने होते हैं लोग साले मदद तो नहीं करेंगे उल्टा उटपटांग बातें और करेंगे। गुस्सा तो ऐसा आता है कि इनका मुंह नोंच लूं।

डल्ली – जाने दो भैया क्यों अपना दिमाग खराब करते हो। गरज अपनी है। लोग तो कुछ भी बोलेंगे। चलो अपन आगे बढ़ते हैं जब कोई दूसरी गाड़ी आएगी तब देखेंगे।

(दोनों पैदल चलने लगते हैं)

देव – देख डल्ली एक और कार आ रही है। ये जरूर किसी बड़े अफसर की है देख ऊपर लाल बत्ती भी लगी हुई है। मुझे लगता है ये जरूर हमारी मदद करेगा।

डल्ली – हाँ भैया है तो ये कोई बड़ा ऑफिसर, इसे हमारी मदद करने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। वैसे भी अब अँधेरा हो गया है अगर इसने हमारी मदद नहीं की तो अब हमें कोई और गाड़ी भी नहीं मिलने वाली। गाड़ी नज़दीक आ रही है अपन इसे हाथ देते हैं।

(दोनों हाथ देते हैं और गाड़ी रूकती है)

देव – ड्राईवर साहब हमारी मोटर साइकिल का एक्सीडेंट हो गया है और हमें चोट लगी है हमें कृपया मेन रोड तक छोड़ देंगे, आपकी बहुत मेहरबानी होगी।

ड्राईवर – पीछे सेक्रेटरी साहब बैठे हैं उनसे बात कर लो। सर ये लोग आपसे बात करना चाहते हैं।

देव – सर हमें चोट लगी हुई है और हम चलते–चलते अब थक भी बहुत गए हैं, अँधेरा हो गया है सो अलग। सर आप हमें सरिस्का के गेट तक छोड़ देंगे तो आपकी बहुत मेहरबानी होगी।

अफसर – भाई मैं एक सरकारी आदमी हूँ, मैं किसी लफड़े में नहीं पड़ना

चाहता इसीलिए मैं आपको नहीं ले जा सकता।

देव – सर अँधेरा हो गया है और हम थक गए हैं, आप सरकारी आदमी हैं इसीलिए आपसे हमें बहुत आशा है। मैं भी भारत सरकार का मुलाजिम हूँ और ये मेरा छोटा भाई है। सर आप जैसा बड़ा अधिकारी जो कि जनता का सेवक भी होता है हमारी मदद नहीं करेगा तो किसी साधारण आदमी से हम क्या उम्मीद करें।

अफसर – देखो भैया आप लोगों के खून लग रहा है। मैं किसी लफड़े में नहीं पड़ना चाहता। वन विभाग की गाड़ी पेट्रोलिंग करते हुए यहाँ से गुजरेगी आप उनसे मदद ले लेना। मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकता।

देव – खून निकल रहा है तभी तो आपकी मदद की जरूरत पड़ रही है सर। उसमें भी आप इतना सोच रहे हैं सर। क्या आपका फ़र्ज़ नहीं बनता कि किसी परेशान, मुसीबत में फँसे आदमी की मदद करे। सर अँधेरा हो गया है, जंगली जानवरों का खतरा है सो अलग और न जाने पेट्रोलिंग की गाड़ी कब आये। सर थोड़ी दूरी की ही तो बात है। हमारी मदद करो सर।

अफसर – सॉरी मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकता। मुझे देर हो रही है। ड्राईवर जल्दी चलो यहाँ से ।

(गाड़ी चलने की आवाज़)

डल्ली – नाश हो इस कम्बख्त का। इतना बड़ा अधिकारी होकर भी कैसे डर रहा था। इसका क्या जाता अगर हमें भी साथ ले चलता तो, पूरी गाड़ी खाली थी केवल अकेला ये मनहूस इसमें बैठा था।

देव – डल्ली ऐसे ही अफसरों के कारण तो देश का बेड़ा गर्क हुआ पड़ा है। ये लोग समाज की क्या सेवा करेंगे जो सामने खड़े घायल व्यक्ति की मदद न कर सके। चल भाई अब अपनी नैय्या बालाजी ही पार लगायेंगे।

डल्ली – चलो भैया अपन तो अपना सफ़र तय करते हैं। अब तो कोई भगवन का बंदा ही अपनी मदद कर सकता है। देखते हैं कोई और गाड़ी भी है या नहीं अपने नसीब में । देखो भैया एक गाड़ी और आ रही है दूर से हेड लाइट की रोशनी दिखाई दे रही है। मुझे लगता है ये आखरी गाड़ी ही होगी। इसके बाद मुझे नहीं लगता के हमें कोई और गाड़ी मिलेगी। शायद ये अपने को लिफ्ट दे दे, आने दो इसको पास । हे भगवान कुछ तो मदद करो। आजा भाई आजा ....

देव – आने तो दे इसे यार इतना बेताब मत हो। ये ही अपनी अंतिम आशा लगती है।

डल्ली – आ गई गाड़ी नज़दीक, रोको भैया गाड़ी रोको, रोको रोको ..

(गाड़ी रूकती है)

ड्राईवर – क्या बात है भाई ?

देव – सर हमारी मोटर साइकिल का एक्सीडेंट हो गया है और हमें चोट लगी है हमें मेन रोड़ तक पंहुचा देंगे तो बड़ी मेहरबानी होगी ।

ड्राईवर – वो तो ठीक है भाई लेकिन....

देव – सर समझ गया आप तो पहले ही पांच लोग गाड़ी में बैठे हो हम इसमें कैसे आ पायेंगे ।

ड्राईवर – नहीं नहीं वो बात नहीं है, मैं ये सोच रहा हूँ कि आप लोगों को एडजस्ट कैसे करूं। ऐसी हालत में मैं आप लोगो को यहाँ नहीं छोड़ सकता। ऐसा करते हैं आप एक बच्चे को अपनी गोद में ले के बैठ जाना, एक बच्चे को मेरी पत्नी अपनी गोद में लेकर बैठ जाएगी, थोड़ा सा ही तो सफ़र है मैं आपको लिए चलता हूँ, ठीक है न।

देव – सर हमारी खातिर आप इतना परेशान क्यों होते हैं, जो लोग बिल्कुल खाली गाड़ी लेकर जा रहे थे उन्होंने हमें नहीं बिठाया, तो आप तो फिर भी परिवार के साथ है।

ड्राईवर – ऐसा थोड़े ही होता है, इंसान ही इंसान के काम आता है। राजू बेटा तुम अंकल की गोद में बैठ जाओ और सोनू तुम मम्मी की गोद में बैठ जाओ। थोड़ी देर की ही परशानी है बच्चों। आओ भाई आप दोनों अन्दर आ जाओ। वैसे भी इस समय यहाँ बिना वाहन के चलने में कौन सी समझदारी है ।

देव – सर बहुत–बहुत धन्यवाद। आप जैसे सहृदय व्यक्ति को हम परेशान कर रहे हैं। डल्ली तू पीछे बैठ जा मैं इस बच्चे को लेकर आगे बैठ जाता हूँ। चलिए सर।

(गाड़ी चलती है)

ड्राईवर – वैसे मैंने आप लोगों को पहचान लिया था। जब आप लोग मंदिर

में दर्शन कर रहे थे तब हम भी मंदिर में ही बैठे थे पर आपके साथ ये हादसा कैसे हो गया।

देव – सर हमें एक नीलगाय दिखाई दी, हम मोटर साइकिल पर थे। हम उसको देख ही रहे थे कि कोई पत्थर का टुकड़ा टायर के नीचे आ गया और हमारी मोटर साइकिल स्लिप हो गयी। सामने से एक बस भी आ रही थी वो तो हमारी किस्मत अच्छी थी जो हम उसके नीचे नहीं आये। भगवान ने आपके रूप में हमारे पास एक देवदूत भेजा है।

ड्राईवर – नहीं–नहीं मैं कोई देवदूत वेवदूत नहीं हूँ भाई। मैं तो बस एक इंसानी फ़र्ज़ निभा रहा हूँ । वो ही कर रहा हूँ जो इस समय एक इंसान को करना चाहिए। वैसे मेरा नाम मनोज खंडेलवाल है, मेरा भतीजा मेरे पास आया हुआ था उसने बहला फुसला कर मेरे दोनों बच्चों को सरिस्का चलने के लिए तैयार कर लिया और हम सपरिवार यहाँ आ गए।

देव – सर मेरा नाम देव है और ये मेरे मामा का लड़का है डल्ली, यह भी अलवर से हमारे यहाँ आया हुआ था इसने भी सरिस्का आने का प्रस्ताव रखा और हम अपनी मोटर साइकिल से जयपुर से यहाँ आ गए।

ड्राईवर – आपकी मोटर साइकिल का क्या होगा?

देव – सर उसका तो कल देखेंगे। फारेस्ट वालों से बात करेंगे। अभी गेट पर मैसेज छोड़ जायेंगे कि वो हमारी मोटरसाइकिल को गेट तक पंहुचा दे ।

ड्राईवर – लो जी ये सरिस्का का गेट भी आ गया ।

देव – बहुत बहुत धन्यवाद सर। आपने हमारी इतनी सहायता की, आपका यह अहसान हम जिंदगी भर नहीं भूलेंगे । डल्ली चल भाई उतर ।

ड्राईवर – उतर कहाँ रहे हो मेरे भाई। मैडम आप बच्चों के साथ यहाँ उतर जाओ और यहाँ पांच मिनट इंतज़ार करो। मैं इन्हें डॉक्टर के दिखा कर अभी आता हूँ।

देव – सर आप ये क्या कर रहे हैं। आप अपने बच्चों को यहाँ क्यों उतार रहे हैं। हम ठीक हैं हम आराम से डॉक्टर के पास पहुँच जायेंगे। आपने इतना कुछ किया ये ही कोई कम है क्या।

ड्राईवर – नहीं भाई पांच मिनट की और बात है पास में ही इधर एक क्लिनिक है वहाँ आपकी दवा–पट्टी करवा देता हूँ। फिर आप भी फ्री और मैं भी फ्री। मैडम अपना और बच्चों का ध्यान रखना मैं अभी गया और अभी आया। चलो जी देव बाबू अपन तो क्लिनिक चलते हैं।

(गाड़ी चलने की आवाज़)

ड्राईवर – ये लो क्लिनिक आ गया, आओ मैं तुम्हे डॉक्टर को दिखा देता हूँ। डॉक्टर साहेब इनके चोट लगी है ज़रा आप इन्हें देखकर मरहम पट्टी कर दें।

डॉक्टर – अ अ....आओ मैं तुम्हारी चोट देखता हूँ आप दोनों के एक–एक दो–दो टांके लगेंगे बोलो लगा दूं।

देव– नहीं–नहीं डॉक्टर साहेब आप तो हमारी मरहम पट्टी कर दो केवल। और हाँ खंडेलवाल सर आप तो चलो, आपकी फैमिली आपका इंतज़ार कर रही है। अब हम ठीक है और मरहम पट्टी करा लेंगे। आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। आपका ये एहसान हम जिंदगी भर नहीं भूलेंगे। नमस्तेजी।

ड्राईवर – चलो मैं आपके कुछ काम आ सका मेरा आज का दिन सफल हो गया। आप लोग अपना ध्यान रखना।

डॉक्टर – लो जी आप लोगों की पट्टी हो गयी, एक दो दिन घर पर ही ड्रेसिंग कर लेना और चोट पर पानी मत लगने देना।

देव – ठीक है डॉक्टर साहेब ये लीजिये आपकी फीस। चल भाई डल्ली।

डल्ली – चलो भैया, अभी तो अपने को आगे भी सफ़र करना है। पर भैया इस दुनिया में खंडेलवाल जैसे भी लोग हैं विश्वास नहीं होता। पर भैया हमने तो इनका पता भी नहीं पूछा और न ही कोई टेलीफोन नंबर ही लिया ।

देव – सही कहा डल्ली अपने से बहुत बड़ी गलती हो गयी। ये हमारे लिए किसी देवदूत की तरह आया था और हमने इसका पता और टेलीफोन नंबर भी नहीं लिया। खैर हम भगवान से हमेशा इसके और इसके परिवार की सलामती की दुआएं करते रहेंगे।

❑❑

जाम-ए-इश्क

मंजूर अली अंसारी, अपर आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर

चलो जाम-ए-इश्क पिलाकर तो देखें
चलो दिल से दिल को मिलाकर तो देखें
खड़ी नफरतों की जो ऊंची दीवारें
चलो उनको फिर से गिराकर तो देखें।

गमों से भरे जो हैं इंसा यहां पर
चलो उनको फिर से हंसाकर तो देखें
ज़मीं पर जो खींची लकीरें यहां पर
चलो उनको फिर से मिटाकर तो देखें।

जुदा हो गए ग़ैर हो कर जो हम से
चलो उनको अपना बनाकर तो देखें
जो बरसों से रूठे हो अपने यहां पर
चलो उनको फिर से मना कर तो देखें।

खुदा की है नेमत इश्क़ इस जहां में
चलो खूब इसको लुटा कर तो देखें
नशा इश्क में है तो फिर पीकर देखो
चलो जाम-ए-इश्क लड़ा कर तो देखें।

अना के तसव्वर से मगरूर सब हैं
चलो छोड़ उसको हटा कर तो देखें
सभी के दिलों में गर बसता जो रब है
चलो इश्क में सिर झुका कर तो देखें।

हिंदी दिवस : एक आत्मावलोकन

संजय शर्मा, अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

14 सितम्बर के दिन हिन्दी को संवैधानिक रूप से भारत की आधिकारिक भाषा का दर्जा मिला था। दो सौ साल की ब्रिटिश राज की गुलामी से आजाद हुए देश ने तब ये सपना देखा था कि एक दिन पूरे देश में एक ऐसी भाषा होगी जिसके माध्यम से कश्मीर से कन्याकुमारी तक संवाद संभव हो सकेगा। आजादी के नायकों को इस बात में तनिक संदेह नहीं था कि हिन्दुस्तान की संपर्क भाषा बनने का महती दायित्व केवल और केवल हिन्दी उठा सकती है। इसीलिए इस संविधान निर्माताओं ने देवनागरी में लिखी हिन्दी को नए देश की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया।

संविधान निर्माताओं ने तय किया था कि जब तक हिन्दी वास्तविक अर्थों में पूरे देश की संपर्क भाषा नहीं बन जाती तब तक अंग्रेजी भी देश की आधिकारिक भाषा रहेगी। संविधान निर्माताओं का अनुमान था कि आजादी के बाद अगले 15 सालों में हिन्दी पूरी तरह अंग्रेजी की जगह ले लेगी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हों या देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, सभी इस बात पर एकमत थे कि ब्रिटेन की गुलामी की प्रतीक अंग्रेजी भाषा को हमेशा के लिए देश की आधिकारिक भाषा नहीं होना चाहिए। लेकिन अंग्रेजों के जाने के बाद भी उनकी फूट डालो और राज करो की नीति भाषा के क्षेत्र में चलती रही। हिन्दी को एकमात्र आधिकारिक भाषा के खिलाफ उसकी बहनों ने ही बगावत कर दी। उन्होंने एक परायी भाषा अंग्रेजी के पक्ष में खड़ा होकर अपनी सहोदर भाषा का विरोध किया। जबकि उनका भय पूरी तरह निराधार था। हिन्दी किसी भी दूसरी भाषा की कीमत पर राष्ट्रभाषा नहीं बनना चाहती। देश की सभी राज्य सरकारें अपनी-अपनी राजभाषाओं में काम करने के लिए स्वतंत्र थीं।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार परस्पर सह-अस्तित्व पर आधारित था, न कि एक भाषा की दूसरी भाषा की अधीनता पर। आजादी के 70 साल बाद भी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की वह इच्छा अधूरी है। आज पूरे देश में शायद ही ऐसा कोना हो जहां दो-चार हिन्दी भाषी न हों। शायद ही ऐसा कोई प्रदेश हो जहां आम लोग कामचलाऊ हिन्दी न जानते हों। भले ही आधिकारिक तौर पर हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा न हो केवल राजभाषा हो, व्यवहारिक तौर पर वो इस देश की सर्वव्यापी भाषा है। ऐसे में जरूरत है हिन्दी को उसका वाजिब हक दिलाने की जिसका सपना संविधान निर्माताओं ने देखा था।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की माँग कमोबेश हर हिन्दी भाषी को सुहाती है। लेकिन इसकी आलोचना पर बहुत से लोग मुँह बिचकाने लगते हैं। आज हम हिन्दी की ऐसी दो खास समस्याओं पर बात करेंगे जिन्हें दूर किए बिना हिन्दी सही मायनों में राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती।

अंग्रेजी, चीनी, अरबी, स्पैनिश, फ्रेंच इत्यादि के साथ ही हिन्दी दुनिया की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में एक है। लेकिन इसकी तुलना अगर अन्य भाषाओं से करें तो ये कई मामलों में पिछड़ी नजर आती है और इसके लिए जिम्मेदार हैं कुछ हिन्दी प्रेमियों का संकीर्ण नजरिया। हिन्दी के विकास में सबसे बड़ी बाधा वो शुद्धतावादी हैं जो इसमें से फारसी, अरबी, तुर्की और अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं से आए शब्दों को निकाल देना चाहते हैं। ऐसे लोग संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों के बोझ तले कराहती हिन्दी को सच्ची हिन्दी मानते हैं। लेकिन यहाँ मशहूर भाषाविद प्रोफेसर गणेश देवी को याद करने की जरूरत है जो कहते हैं भाषा जितनी भ्रष्ट होती है उतनी विकसित होती है। प्रोफेसर देवी का सीधा आशय है कि जिस भाषा में जितनी मिलावट होती है वो उतनी समृद्धि और प्राणवान होती है। अंग्रेजों को लूट, डकैती, धोती और पंडित जैसे खालिस भारतीय शब्द अपनी भाषा में शामिल करने में कोई लाज नहीं आती लेकिन भारतीय शुद्धतावादी लालटेन, कम्प्यूटर,

अस्पताल, स्कूल, इंजन जैसे शब्दों को देखकर भी मुँह बिचकाते हैं जिनका प्रयोग अनपढ़ और गंवई भारतीय भी आसानी से कर लेते हैं। तो हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए जरूरी है कि वो समस्त भारतीय भाषाओं और अन्य भाषाओं से अपनी जरूरत के हिसाब से शब्दों को लेने में जरा भी संकोच न करे। हम परायी भाषा के शब्दों को हिन्दी में जबरन घुसेड़ने की वकालत नहीं कर रहे। लेकिन जो शब्द सहज और सरल रूप से हिन्दी में रच-बस गये हों उन्हें गले लगाने की बात कर रहे हैं।

हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनने में दूसरी बड़ी दिक्कत है इसका ज्ञान-विज्ञान में हाथ तंग होना। कोई भाषा केवल अनुपम साहित्य के बल पर राष्ट्रभाषा का दायित्व नहीं निभा सकती। भाषा को ज्ञान, विज्ञान, व्यापार और संचार इत्यादि क्षेत्रों के लिए भी खुद को तैयार करना होता है। आज हिन्दी इन क्षेत्रों में दुनिया की अन्य बड़ी भाषाओं से पीछे है। गैर-साहित्यिक क्षेत्रों में हिन्दी में उच्च गुणवत्ता के चिंतन और पठन सामग्री के अभाव से हिन्दी बौद्धिक रूप से विकलांग प्रतीत होती है। आज जरूरत है कि विज्ञान और समाज विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दुस्तानी को बढ़ावा दिया जाए। तभी सही मायनो में हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा बन सकेगी। अगर इन दो बातों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए तो हिन्दी को वैश्विक स्तर पर पहचान और प्रतिष्ठा पाने से कोई नहीं रोक सकेगा।

❑❑

समय

शिवानी माहेश्वरी, उप निदेशक (लागत),
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

आइए कुछ सोचें आज हम समय के बारे में .....
आइए बातें करते हैं कुछ आने वाले समय की
आने वाले कल में होने वाले कुछ नए अनुभवों की

कुछ सोचकर डर जाने वाले समय की
और फिर डराते-डराते निडर बना देने वाले समय की

कुछ नया जानने और सिखाने वाले समय की
कुछ सोचकर रोमांचित कर देने वाले अनुभवों की

कभी इंतजार में नहीं कटने वाले समय की
और फिर जल्दी से गुजर जाने वाले समय की
कुछ नया सीखकर उससे बेहतर समय बनाने की
सीखे हुए ज्ञान से साहस जुटाने वाले समय की

मनचाहा न मिलने पर दुखी हो जाने वाले समय की और फिर न मिला तो,
अच्छा हुआ, यह सोचकर खुश हो जाने वाले समय की

कुछ अकेला कर देने वाले समय की
और फिर अकेलेपन को दूर कर देने वाले समय की

कुछ समय के अनुरूप और कुछ समय के आगे झुक जाने की
और ये सोच के खुश हो जाने की
कि समय नहीं रहता कभी भी एक जैसा
यह गुजर ही जाता है आखिर चाहे हो ये जैसा

और फिर एक नई सीख सिखा देने वाले समय की ....

❑❑

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (का.–1) जयपुर द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने पर ''ख'' वर्ग
में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री जे.पी.मीना,
अपर आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण
आयुक्तालय, जयपुर

''क'' वर्ग
में सांत्वना द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री हरी सिंह, सहायक आयुक्त,
सीमा शुल्क आयुक्तालय
जयपुर

राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2020-21 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने पर प्रदत्त राजभाषा शील्ड

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर संभाग-एफ, जयपुर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए
श्री संदीप पायल, उपायुक्त

सीमा शुल्क संभाग, बीकानेर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए
श्री मुकेश कटारिया, संयुक्त आयुक्त

सीमा शुल्क आयुक्तालय जयपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2020-21 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने पर प्रदत्त पुरस्कार

न्यायनिर्णय शाखा (मु.), जयपुर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री विकास जेफ, अपर आयुक्त

सिस्टम शाखा (मु.), जयपुर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करती हुए सुश्री अनुपमा सक्सेना, सहायक आयुक्त

प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए सिस्टम शाखा (मु.) जयपुर के अधिकारीगण।

प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए न्यायनिर्णय शाखा (मु.) जयपुर के अधिकारीगण।

हिंदी डिक्टेशन/टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2020-21

केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री राधेश्याम सैनी, मुख्य लेखाधिकारी

सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए
डॉ. बी. के. मीना, संयुक्त आयुक्त

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2020-21

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2020-21

सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2020-21

राजभाषा समारोह - 2020

पूर्ण स्वच्छता का लक्ष्य - ये सफर जरा फिल्मी है

विशाल सोलंकी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जोधपुर

'स्व'च्छता' जिसके बारे में कहा जाता है कि ये हमारे जीवन का मुख्य अंग है। परंतु क्या सच में स्वच्छता हमारे जीवन का एक अंग मात्र है। अगर ऐसा है तो बताएं, क्या स्वच्छता के बिना जीवन संभव है? 'स्वच्छता' को किसी परिभाषा मे बांधना उतना ही मुश्किल है, जितना 'डॉन को पकड़ना जिसके पीछे 195 देशों की पुलिस लगी हो।' कहने को स्वच्छता जीवन का मुख्य अंग है किन्तु यह कहना भी अतिश्योक्ति पूर्ण नहीं होगा कि ये जीवन का अंग नहीं, जीवन की वो आधारशिला है जिसके बिना जीवन संभव नहीं। स्वच्छता सिर्फ कचरे की सफाई रखना ही नहीं वरन् ये जीवन के हर भाग - मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक का सच्चा दर्शन है जिसमें शरीर, मन और हमारे चारों ओर की वस्तुओं और वातावरण सभी की वास्तविक गरिमा, शालीनता, आस्तिकता के दर्शन होते हैं। ''य: अर्थे शुचि: हि स: शुचि:....'' अर्थात् बाह्य दिखावटी स्वच्छता से कहीं अधिक महत्त्व आंतरिक अर्थात् मन और बुद्धि के स्तर की स्वच्छता का है।

जहाँ स्वच्छता होती है वहां वैसे भी गंदगी करने में स्वत: ही संकोच होता है, जैसे -मंदिर या साफ़ हॉस्पिटल, किन्तु जहाँ गन्दगी का लेश-मात्र भी होता है, उस जगह को लोग कूड़ादान ही बना डालते हैं। कहा भी गया है - गोबर से सने लोटे में पानी मांगने जाओगे तो पानी भी नहीं मिलेगा और साफ़ बर्तन में 'दूध मांगोगे तो खीर देंगे, गंदगी को चीर देंगे'। कहने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि जरूरत है देश को इतना जागरूक कर देने की, कि हर स्थान और हर मन इतना साफ हो कि उसमें कलुषिता का संगम होने की गुंजाइश ही ना रहे।

आप सबने स्वयं भी महसूस किया होगा कि किसी स्थान या रास्ते पर गंदगी देख कर हमारे मन में वहाँ के निवासियों के प्रति बुरी धारणा का निर्माण होता है उसी प्रकार हमारे देश के प्रति विदेशी पर्यटकों के मन में भी बुरी धारणा का निर्माण होता होगा। 'मार्गे स्वच्छता विराजते । ग्रामे सुजना: विराजते' अर्थात सड़क पर सफाई होने से पता चलता है कि गांव में स्वच्छ लोग रहते हैं। जिस प्रकार स्वच्छता की वजह से हमारे कश्मीर और विदेशों के बारे में सोचते हुये हम लोग सदैव साफ और स्वच्छ देशों की सम्मानीय कल्पना करते हैं।

शुद्ध आचरण से स्वच्छ आचरण का विकास होता है और स्वच्छ स्थान पर स्वयं ईश्वर / लक्ष्मी का निवास होता है। हम लोग ये जानते और मानते तो हैं पर व्यवहार मे नहीं लाते और अस्वच्छता फैलाते हैं। जिस तरह दिन-प्रतिदिन हम इस विश्व में अस्वच्छता और प्रदूषण बढ़ाने मे अपना योगदान दे रहे हैं, शायद एक ऐसा वक्त भी आए जब ऊपर जाकर जीवन के लेखे-जोखे के वक्त ईश्वर पूछे कि ऐसे 'कितने आदमी थे रे' और चित्रगुप्त

पुकार कर जवाब दे कि 'आदमी कहां है प्रभु!! सारे तो कचरे की फैक्ट्रियां बन चुके हैं'। वो वक्त भी दूर नहीं,जब आने वाली पीढ़ियां इन कचरे के पहाड़ों से मुखातिब हों और अपने प्रगति के रास्ते ढूंढे तो यही प्रदूषण का दानव चिल्लाकर कहेगा कि 'हम तुम्हारी पृथ्वी पर इतना कचरा भर देंगे कि तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि रहे कहां पर और निकले किधर से'।

यह सिर्फ व्यंग्य के छंद नहीं, यह सच्चाई है इस पृथ्वी की, अगर कचरे के कुल ढेर का आकलन किया जाए और इसमें समंदर की गहराइयाँ छोड़ दी जाएं, तो स्थल के क्षेत्रफल का 15%, हाँ, जी। बिल्कुल सही सुना आपने, कुल 15% क्षेत्र विभिन्न तरह के कचरों से भर गया है। स्थिति आज इतनी डरावनी है तो आज से 100 साल बाद क्या होगा, हो सकता है कि हम बारूद के ढेर पर ना हो, किंतु ये कचरे का ढेर भी परमाण्वीय कचरे से कम नुकसानदायक नहीं। कल्पना करते हुए तुलना करके देखिए कि 100 फीट दूर फटा बम कितना जानलेवा होगा और बालू का वह कचरे का ढेर कितना, जिसमें व्यक्ति अनवरत दबता जा रहा हो। हो सकता है बम से सिर्फ हाथ पांव टूट जाए किंतु वह बालू, वो कचरा सांस ही छीन लेगा, इसमें शक नहीं है। बम से याद

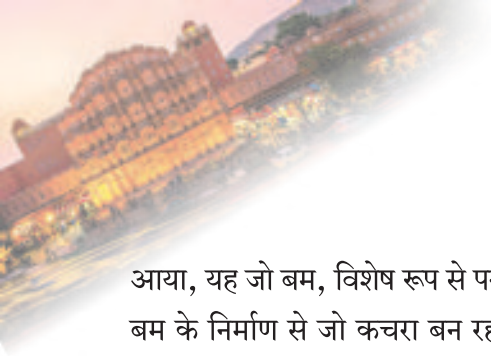

आया, यह जो बम, विशेष रूप से परमाणु बम के निर्माण से जो कचरा बन रहा है, वह क्या है, वह सिर्फ हमारे लिए ही खतरनाक नहीं हैं अपितु पूरे मानव सभ्यता के लिए खतरा है। ये एक दिन ऐसा ले डूबेगा जैसे कभी डायनासोर विलुप्त हो गए थे। पर इस बार कोई प्राणी वापस नहीं पैदा होगा, क्योंकि परमाणु कचरा इतना घातक है कि जिसका प्रभाव, जापान में आज 75 साल बाद भी पैदा हो रहे दिव्यांग और मानसिक विकलांग बच्चों में दिखता है। यही कचरा एक दिन सबकी जान लेकर आखिरी व्यक्ति से पूछेगा कि 'आज मेरे पास पहाड़ है, समुंदर है, तुम्हारी आबोहवा है, तुम्हारे पास क्या है?' और हम सिर्फ यही कह पाएंगे कि 'मेरे पास मृत्यु लोक का अंतिम सत्य मृत्यु है।'

हम और आप जो यह कह कर सड़कों पर, गलियों में, घरों के बाहर, कार्यालयों में, नदियों में और पर्यटन स्थलों पर, सभी जगह यह सोचकर कचरा फैला रहे हैं कि 'बड़े-बड़े देशों में ऐसी छोटी-छोटी प्लास्टिक थैलियां होती रहती हैं।' वह यह सोच भी नहीं सकते कि यदि पृथ्वी की इन सभी थैलियों को इकट्ठा किया जाए तो कभी ना विघटित होने वाला, एक ऐसा पहाड़ खड़ा हो सकता है कि जो ऊंचाई में एवरेस्ट का दोगुना और चौड़ाई मे साढ़े तीन गुना होगा। साथियों! केवल यह कहने में गर्व की बात नहीं है कि 'मैं आज भी फेंका हुआ कचरा नहीं उठाता' वरन् गर्व कि बात है खुद कचरा न फैलाना और फेंका हुआ कचरा उठा लेना। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की विश्वव्यापी अपील के बाद जनमानस में इतना सुधार तो आया है कि सफाई का महत्त्व लोग समझने लगे हैं। कोई करे ना करे, परंतु यूट्यूब पर ऐसे वीडियो जरूर मौजूद हैं कि लोगों ने दूसरों का फेंका हुआ कचरा उठाया और उन्हें देखकर सभी इसी कार्य में जुट गए। कोई करे ना करे परंतु यूट्यूब पर ऐसे वीडियो जरूर मौजूद है कि लोगों ने दूसरों का फैंरा हुआ कचरा उठाया और उन्हें देखकर सभी इसी कार्य में जुट गए। ऐसा कोई कर ना पाए परंतु ऐसे वीडियो के किरदारों को भी सैल्यूट करने को दिल करता है।

अगर हम सभी भारतवासी इसी तरह अपनी देशभक्ति का सबूत देने लगें तो 1 दिन 'मोगेंबो खुश हो ना हो' परंतु हम सबका अपना मन जरूर खुश और हर्षित हो जाएगा और हमारी संतानें स्वच्छ वायु में भी सांस ले सकेंगी वरना तो वायुमंडल में इतनी ऑक्सीजन भी नहीं जिसे सिलेंडर में कैद कर हम सभी जिंदा रह सकें।

वायुमंडल में भी तो हमने छेद कर दिया है। ओजोन छिद्र नाम से पता ना हो तो 'एक बार एक बर्फ का टुकड़ा तो, तबीयत से उछालो यारों कौन कहता है आसमां में छेद नहीं होता', आने वाली पराबैंगनी किरणों से वह टुकड़ा बैंगनी हो ना हो,पर कुछ त्वचा रोग बन कर लोगों पर जरूर बरसेगा और कहीं ज्यादा ऊपर चला गया तो अंतरिक्ष में मौजूद उपग्रहों के नाम से फैलाये गए, किसी मानव निर्मित अंतरिक्ष के कचरे से जरूर टकराएगा।

हमें खुद जागरूक होकर आगे बढ़ना होगा और साथ ही सबको जागरूक करना पड़ेगा। सिर्फ तारीख पर तारीख, तारीख पर तारीख और तारीख पर तारीख देने से कुछ नहीं होगा। सिर्फ पांच मई को ही साबुन से हाथ धोकर, विश्व स्वच्छता और विश्वस्त स्वच्छता दिवस मनाने से कुछ नहीं होगा। अस्वच्छता कई तरह के खतरनाक कीटाणुओं और जानलेवा बीमारियों की उत्पत्ति का कारण होती है। ऐसा ही एक विषैला विषाणु कोरोना, अस्वीकार्य आदतों से चमगादड़ों के भक्षण के कारण फैला, जिसका कमाल आज तक की सबसे बड़ी महामारी के रूप में पूरे विश्व ने देखा। इसको कम आँकने की गलती के खामियाजे के रूप में, हम सभी को अपनी सीमाएं, एक 125 नैनोमीटर माप का विषाणु (कोविड-19), पहले ही दिखा चुका है। अगर हम अब भी ना संभले तो ऐसा कोई अन्य विषाणु फिर से आकर सब समझा जाएगा, परंतु उसके बाद हममें से करोड़ों जीवन जिनमें हमारे साथी, रिश्तेदार और शायद हम स्वयं, शेष ना होंगे। जैसे दोस्ती का एक उसूल होता है 'नो थैंक्स नो सॉरी' वैसे ही हर आगाज़ का भी एक उसूल होता है 'नो तारीख नो व्यक्ति'। शुरू वहां से हो, जहां हम हैं । छोटे से की गई शुरुआत, आखिर एक सुनामी का रूप लेकर आएगी जैसे टिकटॉक वीडियो (ऊप्स, ये तो चीनी है, चलो इसे यू-ट्यूब पढ़ा जाए) वायरल हो जाते हैं।

यदि इस अस्वच्छता के विरुद्ध यह आगाज हम सभी मिलकर करेंगे तो फिल्मों की तरह हमारे जागरूकता के अभियान का भी, अंत में सब ठीक हो जाएगा और अगर सब ठीक ना हो तो वह एंड (अंत) नहीं दोस्तों ! समझो, संघर्ष अभी बाकी है। हमें इस आगाज को अंजाम तक लेकर

जाना होगा ताकि एक हैप्पी एंडिंग हो और अच्छी स्वच्छ आदतें और कचरे का पूर्ण-दोहन (समाप्ति) या फिर पुनर्दोहन (रीयूज) हो क्योंकि 'हम जहां खड़े हो जाते हैं लाइन वहीं से शुरू होती है'। साथियों ! 'कभी-कभी कुछ जीतने के लिए हारना पड़ता है और हार कर जीतने वाले को बाजीगर कहते हैं'।

यह जंग हम अपनी गलत आदतों और आगे बढ़ जाने की अंधी होड़ के चलते लगभग हार ही चुके हैं किंतु अब हमें अपनी पूर्ण मानवशक्ति से आगे बढ़कर, कुछ कर दिखाना होगा क्योंकि अश्वशक्ति से कचरा एक जगह इकट्ठा तो किया जा सकता है किंतु लीद फिर भी सड़क पर ही रहेगी। हमें, अपनी मानव शक्ति को, वह शक्ति जिसे योग शक्ति कहते हैं वह शक्ति जिससे मस्तिष्क की शक्ति कहते हैं, के साथ आगे बढ़ना होगा क्योंकि भोग और उपभोग की शक्ति तो कचरा फैला चुकी है, पर अब उसका समूल उन्मूलन और हमारी पृथ्वी माता, हमारे वायु देवता, हमारे वरुण देव का और इस संपूर्ण व्योम का विचार मंथन कर यह विष समाप्त करना होगा और जीवन का पुनर्निर्माण कर अमृतमयी वायु, जल तथा ब्रह्मांड का निर्माण करना होगा। हमें ईश्वर प्रदत्त शक्तियों से एक नए देव का निर्माण करना होगा जो ईश्वर को सबसे प्रिय हो, जो चुटकी बजाकर सब कुछ स्वच्छ कर दे और यह स्वच्छ-देव स्वयं मानव ही होगा। एक सामान्य मानव रूप में हम सभी के रूप में, सदा-सदा के लिए।

माना कुछ लोग, कुछ उद्योग घराने बिना अपनी जिम्मेदारी समझे, इस हेतु लग गए हैं कि अस्वच्छता के दैत्य 'वो तुझे मरने नहीं देंगे किंतु कचरे रूपी अनारकली हम तुझे जीने नहीं देंगे'। कहने को सिर्फ प्लास्टिक की एक थैली या छोटा टुकड़ा किन्तु बढ़ते-बढ़ते ये गन्दगी के ऐसे पहाड़ बन जाते हैं जो विघटित ही नहीं हो पा रहे । यूं तो 'स्वच्छता का इंतजार तो 195 देश की जनता कर रही है किंतु बिना कोई कदम बढ़ाये, इस कचरे का नियंत्रण मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है'। अगर हम केवल खुद बचने का ख्याल कर घर का कचरा सड़क पर डालते रहे तो हम सिर्फ यही सोच सकते हैं कि 'आपके पांव कितने हसीन हैं इन्हें जमीन पर मत रखना, ये मैले हो जाएंगे' परंतु सिर्फ सोचते रह जाने से, फिर कभी, ना तो कुछ 'पाक' रहेगा और ना ही हम सभी में कोई 'पाकीजा'।

हमें अस्वच्छता के गंदगी और बदबू से सने राक्षस को आईना दिखाना होगा कि सदियों से इस धरा पर राम रूपी मानव का राज्य रहा है और सदा ही उसी का साम्राज्य रहेगा। हमें उसे याद दिलाना होगा कि 'रिश्ते में तो हम तुम्हारे बाप होते हैं नाम है शहंशाह'।

चाहे और किसी को यह बताएं ना बताएं कि जो मैं बोलता हूं वह मैं करता हूं और जब मैं नहीं बोलता वह मैं डेफिनेटली करता हूं इसी मुद्दे से काम किया जाए तो यही और स्वच्छता और कचरे का साम्राज्य समाप्त होगा। वरना यह बीमारियों और महामारियों का आतंक ऐसे ही फैलता रहेगा और हम सिर्फ यह कहते रह जाएंगे कि ' तू मुझसे बचकर नहीं जा सकता, मैं तेरा खून पी जाऊंगा'।

सिर्फ यह कहने से काम नहीं चलेगा कि 'हम तो जान हथेली पर लेकर घूमते हैं कोई लेता ही नहीं' क्योंकि हर दिलजले को, आखिर जला दी देगा यह स्वच्छता का दानव, फिर चाहे वो चाहे बीमारी या महामारी बनकर हो या ग्लोबल वार्मिंग या अमल वर्षा या ओजोन छिद्र या ग्लेशियर को पिघला कर या काफी सारे "**या**" के साथ... ।

केवल 'आल इज वेल' कहने से काम नहीं चलेगा हमें ऑल को वेल करना होगा। वरना धरती माता ये आस करती रह जाएगी कि 'मेरे करन अर्जुन आएंगे' और ये अस्वच्छता का असुर-राजकुमार कहेगा कि 'हम तुम्हें वह मौत देंगे जो न तो किसी कानून की किताब में लिखी होगी और न ही किसी मुजरिम ने सोची होगी।' हम लोग सब कुछ खत्म कर चुके होंगे। सोचिए, आखिर हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को क्या दे कर जायेंगे - मन का मैल, कचरे के पहाड़, खुद के लिए असम्मान, जहरीली हवा या विषैले रसायन युक्त जल?

यदि हमें अपने बच्चों को एक जीवन जीने योग्य जहान देना है तो हमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नारे 'गंदगी, भारत छोड़ो' से जुड़े सपने को मन, वचन और कर्म से साकार करना होगा और स्वच्छता को सिर्फ कर्त्तव्य या शिक्षा नहीं, आदत बनाना होगा ।

जय स्वच्छता, जय स्वास्थ्य, जय हिन्द।

❑❑

मैं और मेरी चाय

मनीष

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

मैं और मेरी चाय
अक्सर ये बातें करते हैं

तुम बनाती
तो कितना अच्छा होता

अदरक कूटती
जायका मिलाती
खौलते पानी सा
इश्क उबालती

पत्ती डालती
रंग सजाती
प्योर दूध सा
रिश्ता बनाती

मिश्री जैसी
बातें घोलती
काली मिर्च का
तड़का लगाती

धुआँ छानती
मोहब्बत भरती
गिलास आधा
जिन्दगी पिलाती

मैं और मेरी चाय
अक्सर ये बातें करते हैं

❑❑

ये दोस्ती
हमसे क्यूँ तोड़ दी
एक और गम नया
दोस्त तू दे गया
चल दिया
अकेला छोड़ के

तेरे बिन जीने की
सजाएँ
हमको दे गया
हल्के-हल्के
मुस्करा रहा है फिर
बंधन खोल के

आँखों में तू
रह गया
सितारा
तू बन गया
दुनिया छोड़ के

सुन रहा है ना तू
आवाज दे रहे
सब तुझे
आजा
वापस लौट के

ये दोस्ती
हमसे क्यूँ तोड़ दी

❑❑

छोटी-छोटी उपयोगी बातें

अरुण भटनागर, अधीक्षक, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय जोधपुर

खुश रहिये – हँसिए :

- खुश रहना अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण है। खुशमिज़ाज आदमी अपने साथ रहने वालों को भी खुश रखता है।
- भोजन के समय खुश रहने से भोजन आसानी से पचता है। बीमार इंसान खाना खाते हुए भी खुश नहीं रहता है जबकि स्वस्थ इंसान खाना देखते ही प्रसन्नता प्रकट करता है।
- हँसी संक्रामक होती है एवं हँसने वाले के साथियों तक के खून में हरकत पैदा कर देती है।
- जीवन में असंतोष, चिंताग्रस्त होना आम बात है परन्तु खुश रहकर इन पर सहजता से विजय पाई जा सकती है। एक स्वस्थ हँसी जीवन-युद्ध में बड़े शस्त्र का काम करती है।
- हँसना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का परिचायक है। स्वास्थ्य और प्रसन्नता हमेशा साथ-साथ रहते हैं।

धूप और हमारा स्वास्थ्य :

- जीवन की रक्षा करने वाली सभी शक्तियों का मूल स्रोत सूर्य है। यदि अल्प मात्रा में प्रयुक्त हो तो सूर्य का बड़ा हितकर प्रभाव प्राणियों पर पड़ता है।
- शारीरिक स्वास्थ्य के लिए धूप अत्यावश्यक है। प्रकाश-शक्ति का प्रभाव सीधा रक्त पर पड़ता है। उससे रक्त की ओक्सीजनेटिंग शक्ति बढ़ती है।
- सूर्य की किरणें नाड़ीमंडल में नयी शक्ति भरती हैं। धूप से उसमें विद्युत-धारा आती है। रक्तधारा इसे शरीर में पहुँचाती है और इसके फलस्वरूप हमारी मांसपेशियों की शक्ति में वृद्धि होने से कार्य-शक्ति बढ़ती है।
- यदि बहुत दिनों तक मानव त्वचा को सूर्य की रोशनी नहीं मिले तो मानव शरीर का संतुलन गड़बड़ हो जायेगा। इसके फलस्वरूप नाड़ीमंडल सही रूप से काम नहीं कर पायेगा, शरीर में विटामिन-डी की कमी होगी, शरीर की प्रतिरोधक शक्ति कम होगी और जीर्ण (क्रोनिक) रोगों में उभार आयेगा।
- सूर्य के हर रूप में कष्ट-निवारक शक्ति है परन्तु गलत प्रयोग से हानि भी हो सकती है। कार्डियक और पल्मोनरी रोगियों को धूप स्नान के संबंध में बड़ा ही सावधान रहना चाहिए। बहुत से मधुमेह रोगी भी धूप कम सहन कर पाते हैं।

कितना सोयें :

- प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक निद्रा का संबंध उसकी उम्र, शारीरिक एवं मानसिक अवस्था, स्वभाव, काम तथा

अन्य कई बातों से होता है। अगर सुबह उठ कर ताजगी और स्फूर्ति महसूस हो तो समझना चाहिए कि रात अच्छा विश्राम मिला है तथा उतनी निद्रा पर्याप्त है परन्तु अगर उठने पर आलस्य जान पड़े एवं शरीर में स्फूर्ति नहीं हो तो मतलब यह है कि पर्याप्त निद्रा नहीं हुई है भले हम बिस्तर पर बहुत देर तक पड़े रहे हों।

- हमारे आहार एवं रहन-सहन के लिए निद्रा की आवश्यकता होती है और इसका हमारे शरीर पर विशेष प्रभाव पड़ता है। संयत और संतुलित आहार खाने वालों को अधिक निद्रा की आवश्यकता नहीं होती है। आजकल जो चीजें आमतौर पर खायी जाती हैं वे आवश्यकता से अधिक खा ली जाती हैं, जिससे उनसे निपटने के लिए अधिक सोना आवश्यक हो जाता है।
- अगर हमारा शाम का वक्त शांतिपूर्ण व्यतीत हुआ है तो हमें बहुत जल्द नींद आ जाएगी और

यह नींद ताजगी लाने वाली होनी चाहिए। शारीरिक विकार, उत्तेजना, आशंका, भय आदि का भी निद्रा पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। निम्नलिखित कुछ नियम अच्छी नींद के लिए मददगार हो सकते है –

1. आहार सात्विक तथा संतुलित हो। जहां तक हो सके उत्तेजक पदार्थों से परहेज किया जाना चाहिए।
2. रात का भोजन, विशेषकर पेट भरने वाला भोजन, देर से ना हो।
3. शाम को शांत रहने का प्रयत्न कीजिये, दौड़-धूप से दूर रहिये और सोने में देर मत कीजिये।
4. कम नींद आने से परेशान ना हों, महत्त्व गहरी नींद का है ना कि अधिक देर तक सोने का।
5. बेडरूम में शुद्ध वायु के प्रवेश में कोई बाधा ना हो।
6. जो आदतन अनिद्रा से परेशान रहते हैं, उन्हें सोने से पहले कुछ श्वास सम्बन्धी व्यायाम कर लेने से एवं शिथलीकरण के अभ्यास से सहायता मिल सकती है।

- नींद की दवाइयाँ, चाहे जैसी और जिस प्रकार की हों, स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होती है। इनके दुष्परिणाम को समझें और स्वास्थ्य हित में इनका उपयोग आदतन न करें।

❑❑

सावन बरखा बरसे

अवनी पायल पुत्री श्री संदीप पायल, उपायुक्त, सीमा शुल्क, जयपुर

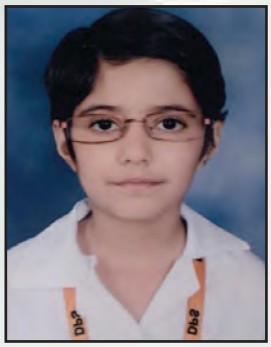

सावन में ये मेघा बरसे मन हरषायाजी।
रिमझिम रिमझिम बरखा आवे मोतीड़ा टपकायाजी।।

गुबार मोठरी खेती में, बाजरियो लहरावेजी।
सावनरी तीजा में म्हेतो, झूला झूलने जावाजी।।

चमचम-चमचम बिजली चमके, मन को डरावेजी।
दादी म्हारी यू कहवे है, बिजली घर को जलावेगी।।

सावन में या बरखा बरसे, हमें बहुत सुहायेजी।
टपटप टापरियों में, पानीडो टपक आयोजी।।

सात सहेली बैठकर, सावन के गीत सुनायेगी।
तीज सिंजारा गाय के, गुठो केसरिये के गायेंगी।।

सावन में या बरखा बरसे बच्चे नहाते चालेजी।
ताल-तल्या सारे भर गये, मेढ़क गीत सुनायेजी।।

सावन में ये मेघा बरसे मन हरषायाजी।
रिमझिम रिमझिम बरखा आवे मोतीड़ा टपकायाजी।।

❑❑

स्मृति-शेष

दीपक पंजाबी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

बेटे, मुझे लगता है कि अब शायद मेरी उम्र पूरी हो गई।

कैसी बात करते हो पापा। आपने इतनी सारी मुश्किलों से पार पायी है...कभी हिम्मत नहीं हारी, फिर आज क्यों मन छोटा करते हो। मैंने अपनी चिंता छुपाते हुए पापा से कहा।

कुछ दिनों से पापा के लेफ्ट हाथ पैर सुन्न हुए जा रहे थे, पैर में से चप्पल निकल जाती थी – उन्हें पता नहीं चलता था और उँगलियाँ भी ठीक से किसी चीज को पकड़ नहीं पा रही थी। कल मैं उन्हें न्यूरोलॉजिस्ट के लेकर गया तो उसने कहा कि ऐसे symptoms आना नार्मल नहीं है, इसलिए आज उन्हें MRI के लिए लेकर जा रहा था।

शाम को MRI की रिपोर्ट देखते हुए जो भाव डॉक्टर के चेहरे पर आ रहे थे वो मेरी चिंता बढ़ा रहे थे।

''हाँ तो सर देखिये'' डॉक्टर को शब्द ढूंढने में वक़्त लग रहा था। ''इनके सर में काफी बड़ा ट्यूमर है। आपने जो डेढ़ साल पहले की MRI दिखाई वो बिलकुल क्लियर है और जो लेटेस्ट है, उसमें इस ट्यूमर की ग्रोथ देखते हुए लगता है कि ये malignant (cancerous) है और कम से कम थर्ड स्टेज का है। सर्जरी तो करनी पड़ेगी नहीं तो आपके पास छह से आठ हफ़्तों का ही वक़्त है।''

''और अगर सर्जरी करवा लें तो'', मैंने उम्मीद नहीं छोड़ी।

''अगर सर्जरी के बाद पूरी रेडियोथेरेपी करवाये तो शायद लाइफ एक से डेढ़ साल तक और चल जाए।'' डॉक्टर ने शायद मेरी आखिरी उम्मीद भी तोड़ दी।

मेरी आँखों के सामने सारी दुनिया जैसे घूम रही थी। भारी मन से डॉक्टर के चैम्बर से बाहर आया और पापा को देखा जो कुर्सी पर सर टिकाये सो गए थे। मन कर रहा था की फूट-फूट कर रोऊँ लेकिन मेरे पास वक़्त नहीं था।

''चलो पापा घर चलें।''

''अरे बेटे मैंने देखा नहीं....तू आ गया....मैं तो सो गया था...क्या कहा डॉक्टर ने'' पापा ने पूछा।

''कुछ नहीं पापा, सब ठीक है....सर में गाँठ है ऑपरेशन करना पड़ेगा'' मैं पूरी कोशिश के बाद भी रुआंसा हो गया।

''तू घबरा मत बेटे, भगवान सब भला करेगा'' पापा को जैसे सब पता था लेकिन मुझे सांत्वना दे रहे थे।

ऑपरेशन हुए करीब आठ माह हो चुके थे और मेरे पापा.....जो कभी रुकते नहीं थे..कभी थकते नहीं थे...अस्पताल में पड़े आँख खोलने को भी मोहताज़ थे। जब उनके सिरहाने रखे टेप में गाना चलता

''मुझे अपनी शरण में लेलो राम'', तो उनकी अधखुली आँखों के कोने से आंसू झरझर बहते। मम्मी बताती थी की सारा दिन कुछ sedation और कुछ ट्यूमर के रिलैप्स होकर बहुत बढ़ जाने के कारण, एक दो बार ही आँख खोलते थे। लेकिन शाम को जब मेरा ऑफिस से आने का टाइम होता तो जैसे उनकी आँखों में जान आ जाती.....कभी घड़ी को और कभी कमरे के दरवाजे पर जाती। जैसे ही मैं और भाई पहुँचते, उनकी बेजान अँगुलियाँ थरथराने लगती। जिन हाथों को करवट दिलाते समय भी हमें ही इधर उधर करना पड़ता था....हमारे पहुँचते ही वो उठते और हमारे सर को एक बार सहला कर फिर से नीचे गिर जाते। आँखे वापस बंद हो जाती लेकिन अब उनमे सुकून होता था कि मेरे बेटे आ गए। जिन हथेलियों में जीवन भर मेहनत कर-करके गांठे पड़ गई, उन हथेलियों की प्यार भरी गर्मी आज तक अपने सर पर महसूस करता हूँ। उनकी स्थिति दयनीय थी और हम....हमारे अपने पापा के लिए दुआ करते कि हे भगवान – और नहीं देखा जाता.....अब तो बुलावा भेज दे।

फिर वो दिन आया, मेरी छतरी, जो जीवन भर हमें धूप-छाँव से बचाती

रही, उड़ गई। एक पल में एहसास हुआ के हमने क्या खो दिया। जिनके लिए हम रोज़ जाने की दुआ मांगते थे, वो हमें अनाथ कर गए। लग रहा था की जैसे हमारा घर बिना छत का हो गया।

4 साल हो गए हैं। हर रोज़ उन्हें ढूंढता हूँ...उगते सूरज में भी और ढलती रात में भी लेकिन शायद आसमान तक जाने वाले आसमान बन जाते हैं। नीले...असीम....निर्बाध। उनके प्यार का अहसास लेने के लिए बारिश में दोनों हाथ खोल कर भीगना पड़ता है....उनकी गोद में सर रखने के लिए गुनगुनी धूप में आँखे मूँद कर सो जाना पड़ता है...और अगर उन हाथों पर अपने गालों को रख कर चूमना हो तो - क्या करूँ.....कहीं दूर पहाड़ों पर जाकर अकेले में कलेजा फाड़के जोर जोर से चिल्लाऊं ....पापा ...पापा...पापा...

शायद आप सुनोगे लेकिन जवाब नहीं दोगे क्योंकि आप लोग वहां सुनते सब हो, लेकिन जवाब नहीं देते।

कोई बात नहीं, मैं ना तो कभी रोया और ना कभी रोऊंगा क्योंकि मैं तो आपका बहादुर बेटा हूँ लेकिन आपको याद ना करूँ, ऐसा कोई वादा मैंने आपसे कभी नहीं किया।

❑❑

आवाज़ एक बेटी की

शालिनी वर्मा, अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

ओ मेरी प्यारी माँ, माना कि तेरी परछाई हूँ मैं,
बहुत कुछ सीखा है तुझसे, लेकिन एक बात कहूँ–
सीता नहीं बनना मुझे, दुर्गा बनने की चाह है
राम नहीं मिलेंगे अब मुझे, तो फिर
सीता होने का क्या औचित्य?
हाँ जानती हूँ रावण से भी अधिक क्रूर, निर्दयी राक्षस
पग–पग पर मिल जाएँगे, इस जग में,
पर नहीं करूँगी इंतज़ार राम के आने का
बन चंडी कर दूँगी मैं संहार पापियों का
दो मुझे आत्मबल और रखो विश्वास
दे पाऊँ हर कुदृष्टि का मुँहतोड़ जवाब।
बहुत हुआ यह सुनते अबला नारी तेरी यही
कहानी, आँचल में है दूध, आँखों में पानी
नहीं होना मुझे सहनशील और त्यागी
न ही किसी लांछन को सुन चुपचाप,
भोगना है मुझे कोई वनवास!
इच्छा है अपनी कहानी खुद आप लिखूं
मेरा जीवन, मेरा अस्तित्व न होने दूँगी बलिदान
समाज के दोगले और खोखले
आदर्शों के नाम।
साथी चाहिए, स्वामी नहीं
आत्मनिर्भरता चाहिए, सोने का पिंजरा नहीं
माँ, कुछ ज़्यादा तो बड़े नहीं हैं ये सपने
मूर्त रूप देने को इनको
देना ही होगा संबल तुमको
क्योंकि मैं तुम्हारी परछाई हूँ
और मेरे इस जीवन की डोर मेरे हाथों
तुमने ही थमाई है

❑❑

पुराने खत

विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

खँगाले पुराने सामान तो कुछ खत भी मिले, कुछ तो ऐसे थे
जिन्हें देख के शरमा गए,

हम ऐसे भी थे !!!!

वो बातें, वो मिज़ाज, वो रूठना-मनाना, वो उर्दू के लफ़्ज़ों
के मायने ढूँढना

वो डाकिये का यूँ इंतज़ार, बेताबी से करना, वो पोस्टमास्टर
को चिट्ठी, खुद दे के आना

वो लिफ़ाफ़े पे बेदर्दी से, गोल मोहर की आवाज़

डाक-थैले में खत डाल,वो डाकबाबू का मुस्कुराना

सभी बातें घूम गईं, वो ज़ेहन में

भर आईं आँखें भी, उनके समर्थन में

कितनी झिझक से करते थे, बयां जज़्बात अपने

पर होते थे वो, पुरकशिश भी कितने

खतों में थी खुशबू, वही पहचानी हुई सी

वो नक़्श भी थे, नहीं पड़े धुंधले इतने

नज़र को थी ज़रूर, ज़रूरत चश्मे की

पर थे याद वो, ज्यों की त्यों मग़ज़ में

बदल गया वक़्त, नहीं रहा ज़माना, खत लिखने का

बाक़ी है ये रिवाज़, बस सरकारी महकमों में

पर नहीं होती, न है दरकार, कशिश की

औपचारिक से होते हैं, ये सरकारी खत कितने

या खुदा आये वापस, वो ज़माना खत लिखने का

वो काग़ज़, वो क़लम, वो स्याही- दवात का

बढ़ गये हैं आगे, बहुत ही आगे

पर नहीं छूटती है याद, उन बातों की, उन खतों की

जो लिक्खे थे जवानी के दिनों में 'उन्होंने',

रंगीन काग़ज़ों पे, रंगीन स्याही से

कुछ खतों पे थे निशां भी आँसुओं के

हो शायद रक्खा, जवाब हमारा भी पास उनके,

जो है दर्ज हर्फ़ दर हर्फ़ हमारे ज़ेहन में।

❑❑

भूख

रवि मलिक, सहायक निदेशक, प्रवर्तन निदेशालय, जयपुर

ऑफिस के लिए जाते समय घर के बाहर पड़ोसी की लड़की को मॉडर्न कपड़ों में जाते देख कर वो बड़बड़ाया;

मां बाप ने संस्कार नहीं दिए इसलिए बच्चे बिगड़ जाते हैं।

फिर वो कार चलाता हुआ ऑफिस की ओर निकल गया।

ऑफिस के रास्ते में आये चौराहे पर कार रोकते ही एक 15-16 साल की लड़की हाथ फैलाते हुए सामने आ जाती है। वो उस लड़की को अपनी नजरों से नीचे से ऊपर तोलता हुआ लम्पटता से बोलता है;

भूख लगी है, पैसे चाहिए।

लड़की उसकी आँखों की चुभन अपने शरीर पर महसूस करते हुए अपने कपड़े सँभालने लगती है और उसके बाद अपना हाथ पीछे करती हुई बोलती है,

पेट मेरा खाली है पर लगता है, भूख तुमको लगी हुई है और वो मुड़कर दूसरी गाड़ी की तरफ चल देती है।

❑❑

दर्द का रिश्ता

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

दर्द के रिश्ते से
बंधे हैं दो हमदर्द
ख्वाब़ और ख्वाहिश
ख्वाब़ देखा
दर्द देकर
ख्वाहिश बन गया
ख्वाहिश
फिर दर्द समेटकर
ख्वाब़ हो गई

❑❑

यह मेरा हिंदुस्तान है

मनु प्रताप सिंह चींचडौली पुत्र श्री जगदीश सिंह शेखावत, हवलदार, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

जो वसुधा, रणवीरों की खान है।
वह मेरा, अजेय हिंदुस्तान है।
सूखा दे अरियों को, जो तेज तापमान है,
वह मेरा, अजेय हिंदुस्तान है।।

शुरू हुई श्री राम से, मर्यादा जैसी सभ्यता।
स्थापित हुई कुरुक्षेत्र में, कर्म की अजेयता।।
विस्मृत कहीं हरिश्चंद्र, जो सत्य-धर्मवान है,
वह मेरा सच्चा हिंदुस्तान है।।1।।

कैसा युग वो राजकुमार, बना संन्यासी अद्भुत।
भुलाकर युद्ध हिंसा को, बने सिद्धार्थ महात्मा बुद्ध।।
धर्म पुनर्जागरण के जो, शंकराचार्य का ध्यान है,
वह मेरा तपस्वी हिंदुस्तान है।।2।।

हुआ मौर्य-गुप्त वंश में, बहुदिशाओं में उत्थान।
किन्तु अरब की उठी आँधी ने, किया हमारा अवसान।।
खिसकी बागडोर जो, विशुद्धियों के हाथों कमान है,
वह मेरा पराजित हिंदुस्तान है।।4।।

हुए है यहाँ शब्दभेदी, पृथ्वीराज सम्राट।
देखा है अतीत ने, हमारा व्यक्तित्व विराट।।
घास की रोटियाँ खाने वाला, जो राणा का स्वाभिमान है,
वह मेरा स्वाधीन हिंदुस्तान है।।5।।

गये मुग़ल और, आये लूटने ब्रितानी।
उपनिवेशों से जमी, ब्रिटेन की
विक्टोरिया रानी।।
बर्बर अत्याचारों से जो, जगा सुप्त
सम्मान है,
वह मेरा विद्रोही हिंदुस्तान है।।6।।

आरम्भ हुआ स्वाधीन समर, जब हुई मंगल को फाँसी।
तब जग उठी चहुदिश विप्लव, कानपुर, लखनोती, झाँसी।।
कुंअर बिहारी बाबू का, जो जगा बूढ़ा जवान है,
वह मेरा युवा हिंदुस्तान है।।7।।

भोगा था सावरकर वीर ने, कठोर कारावास कालापानी।
अर्पित कर दी भारती को, खुदीराम ने अपनी जवानी।।
गुलामों की जंजीरों को तोड़ने, जो जगा बलिदान है,
वह मेरा युद्धरत हिंदुस्तान है।।8।।

लड़े नेताजी सुभाष बोस, बने अद्भुत सेनानी।
गाँधी की अहिंसा ने, लिखी आजादी कहानी।।
पटेल की एकता ने, जो लिखी दास्तान है,
वह मेरा एक हिंदुस्तान है।।9।।

कभी जाना आर्यवर्त तो कभी हिंदुस्तान है,
मेरा अनूठा भारत राष्ट्र महान है।
जो वैश्विक नक्षत्र में सदैव दैदीप्यमान है,
वह मेरा चमकीला हिंदुस्तान है।।10।।

❑❑

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में हिंदी पखवाड़ा-2020 : एक रिपोर्ट

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में दिनांक 01.09.2020 से 15.09.2020 तक राजभाषा पखवाड़ा आयोजित किया तथा इस दौरान मुख्य समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह में विभाग के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री प्रमोद कुमार सिंह, मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर-जोन, जयपुर ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। कार्यक्रम में श्री महेन्द्र पाल, आयुक्त ने सभी को संबोधित किया तथा राजभाषा संबंधी प्रगति विवरण प्रस्तुत किया तथा राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आह्वान किया।

इस कार्यक्रम में श्री महेन्द्र पाल, आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण, जयपुर ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी बहुत ही सरल, सहज एवं सर्वग्राह्य भाषा है। अत: हमें अपने दैनिक कार्यों में हिंदी की छोटी-छोटी टिप्पणियां एवं पत्रादि का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए जिससे राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने का वातावरण सृजित हो सके तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सके ।

राजभाषा शील्ड :

आयुक्तालयों के अंतर्गत हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए आयुक्तालयों के अधीनस्थ संभागों को संबंधित कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा राजभाषा शील्ड प्रदान की गई । यह शील्ड आयुक्तालय-जयपुर में सेवाकर संभाग-एफ तथा सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में बीकानेर-संभाग को प्रदान की गई।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चारों आयुक्तालयों में संयुक्त रूप से निम्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए जिनका विवरण निम्नानुसार है :-

1. हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
2. हिन्दी टंकण (कम्प्यूटर पर)
3. हिन्दी श्रुतलेखन
4. हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन

कार्यालय में भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा लागू प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत हिन्दी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने तथा मूलरूप से हिंदी में टिप्पण आलेखन एवं मसौदा लेखन के लिए नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता

	पुरस्कार	*नाम एवं पदनाम*	*राशि रु. में*
1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री राजेश पारीक, अधीक्षक	2100/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री सुधीर चन्द श्रीवास्तव, वरिष्ठ निजी सचिव	1600/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री देवेश कुमार शर्मा, निरीक्षक	1300/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	डॉ. बी.के. मीना, संयुक्त आयुक्त	500/-

हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री राजेश राठी, अधीक्षक	1500/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	सुश्री शालिनी वर्मा, अधीक्षक	1300/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	सुश्री भूमिका गौतम, कर सहायक	1000/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री राजेश पारीक, अधीक्षक	500/-

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री वरुण यादव, कर सहायक	1300/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री विकास पाल, कार्यकारी सहायक	900/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री मनीष वर्मा, कर-सहायक	700/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री महेश कुमार चौधरी, कर-सहायक	500/-

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री राजेश राठी, अधीक्षक	1800/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री विकास शर्मा, निरीक्षक	1400/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री देवेश कुमार शर्मा, निरीक्षक	1100/-
4.	सांत्वना पुरस्कार	श्री अरविंद कुमार वर्मा,अधीक्षक	500/-

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना 2020-21 हेतु पुरस्कार

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय - जयपुर

1.	*प्रथम पुरस्कार (2)*	1. श्री राधेश्याम सैनी, मुख्य लेखा अधिकारी	5000/-

टिप्पण/आलेखन हेतु : -

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री मान सिंह गुर्जर, कर-सहायक	5000/-
2.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री प्रदीप भूरिया, कर-सहायक	5000/-
3.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री शांता प्रकाश टेलर, कर-सहायक	3000/-

4.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री तिलक शर्मा, कनिष्ठ लिपिक	3000/-
5.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री यशवंत राजोरिया, प्रशासनिक अधिकारी	3000/-
6.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री रमेश चन्द सोनी, कर-सहायक	2000/-
7.	*तृतीय पुरस्कार*	सुश्री स्वाति खंडेलवाल, कर-सहायक	2000/-
8.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री रामरूप मीना, कार्यकारी-सहायक	2000/-
9.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री संतोष कुमार मीना, कर-सहायक	2000/-
10.	*तृतीय पुरस्कार*	सुनील कुमार शर्मा, निरीक्षक	2000/-

केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय-जयपुर

हिंदी टिप्पण /आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :-

1.	*प्रथम पुरस्कार*	1. श्री बलवंत सिंह नाथावत, कनिष्ठ लिपिक	5000/-
		2. श्री रोहिताश्व कुमार यादव, कर-सहायक	5000/-
2.	द्वितीय पुरस्कार	1. श्री राम अवतार शर्मा, कार्यकारी-सहायक	3000/-
		2. श्री अमित वर्मा, कर-सहायक	3000/-
		3. श्री भगवान सहाय, कर-सहायक	3000/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	1. श्री लक्ष्मी नारायण मीणा, कर-सहायक	2000/-
		2. श्री श्रीफल मीना, कनिष्ठ लिपिक	2000/-
		3. श्री मनोज कुमार, कर-सहायक	2000/-
		4. श्री फूल सिंह महावर, कर-सहायक	2000/-

सीमा शुल्क आयुक्तालय-जयपुर

हिंदी डिक्टेशन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार :-

1.	*प्रथम पुरस्कार*	1. डॉ. बिजेन्द्र कुमार मीना, संयुक्त आयुक्त	5000/-

हिंदी टिप्पण /आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :-

1.	*प्रथम पुरस्कार*	1. श्री विश्वास मौर्य, कर-सहायक	5000/-
		2. श्री हेमंत खोंलिया, कनिष्ठ लिपिक	5000/-
2.	द्वितीय पुरस्कार	1. श्री सुनील सुईवाल, कनिष्ठ लिपिक	3000/-
		2. श्री विरेन्द्र सिंह, संचार सहायक	3000/-
		3. श्री सीताराम माली, निरीक्षक	3000/-

❑❑

कार्यालय में आयोजित कोविड टीकाकरण शिविर

सीमा शुल्क दिवस समारोह - 2021

सीजीएसटी रेंज मेडता सिटी में आयोजित रक्तदान शिविर

जीएसटी विभाग मेड़तासिटी सामाजिक सरोकार की पेश की अनुठी मिसाल, आयोजित किया रक्तदान शिविर

बाल चित्रकारी

अन्वी पायल
पुत्री श्री संदीप पायल, उपायुक्त

अवनी पायल
पुत्री श्री संदीप पायल, उपायुक्त

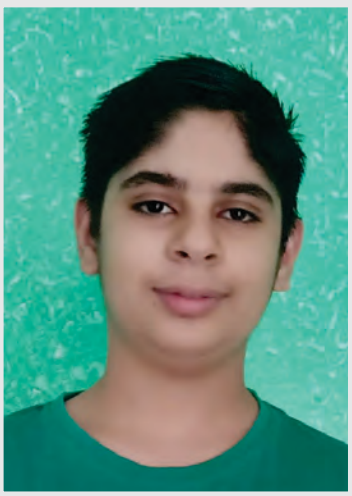

चिराग पायल
भतीजा श्री संदीप पायल, उपायुक्त

राजप्रभा विमोचन कार्यक्रम-2020

हाथी महोत्सव, जयपुर

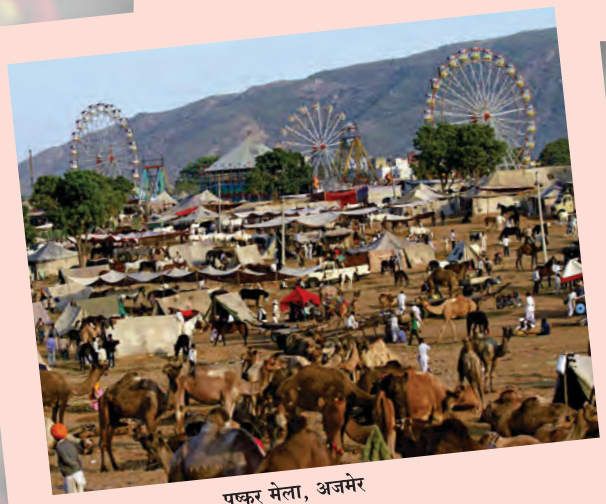

पुष्कर मेला, अजमेर

मरू महोत्सव, जैसलमेर

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर